हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 5, अंकः 317, पृष्ठ 4, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 25 अप्रैल, 2021 दिन रविवार गाजीपुर/वाराणसी

3 माह तक ऑक्सीजन व वैक्सीन के आयात पर कस्टम ड्यूटी नहीं

प्रधानमंत्री मोदी ने बैठक में दिया अहम निर्देश

नई दिल्ली। कोरोना संक्रमण के कारण फैली महामारी के घातक और जानलेवा समस्या के समाधान के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार बैठकें कर रहे हैं। इस क्रम में शनिवार को उन्होंने वरिष्ठ मंत्रियों व अधिकारियों के साथ बैठक की। इसमें उन्होंने अहम फैसला लेते हुए बताया कि अगले तीन माह तक कोविड वैक्सीन व ऑक्सीजन के आयात पर किसी तरह की कस्टम ड्यूटी नहीं लागू की जाएगी। साथ ही इसपर लगने वाले स्वास्थ्य सेस भी नहीं लागू होंगे।

प्रधानमंत्री मोदी ने देश में ऑक्सीजन की उपलब्धता को बढ़ाने के लिए उठाए गए कदमों की समीक्षा के लिए बैठक की। उन्होंने इस पर जोर दिया कि मेडिकल ग्रेड ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाने के साथ घर और अस्पतालों में मरीजों की देखभाल के लिए जरूरी उपकरण भी उपलब्ध कराने की तत्काल आवश्यकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया है कि संक्रमित मरीजों के लिए घरों व अस्पतालों में जरूरी मेडिकल उपकरणों मेडिकल ग्रेड के ऑक्सीजन की सप्लाई सुनिश्चित कराई जाए। प्रधानमंत्री ने सभी मंत्रालयों व विभागों को इसके लिए काम करने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि यह फैसला लिया गया है कि ऑक्सीजन व ऑक्सीजन से संबंधित सभी उपकरणों के आयात पर 3 माह के लिए किसी तरह की कस्टम व सेस से छूट रहेगी। बता दें कि घातक और जानलेवा कोरोना वायरस संक्रमण के कारण फैली महामारी के चपेट में देश की जनता को अस्पताल में जगह नहीं मिल रही यहां तक की सांस लेने के लिए ऑक्सीजन की किल्लत हो गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, पिछले 24 घंटे में देश भर में 3.40 लाख से अधिक नए मामले दर्ज किए गए। हालांकि कोरोना वायरस संक्रमण से 2.19 लाख से अधिक लोग स्वस्थ हुए और मृत्यु दर घटकर 1.14% हो गई।

जयपुर गोल्डन अस्पताल में ऑक्सीजन की कमी से 20 मरीज की मौत, रिश्तेदार कर रहे प्रदर्शन

नई दिल्ली। दिल्ली में ऑक्सीजन की किल्लत के बीच बड़ी खबर आ रही है। राजधानी के रोहिणी इलाके में स्थित जयपुर गोल्डन अस्पताल में ऑक्सीजन की कमी से शुक्रवार देर रात 20 लोगों की मौत हो गई है। मौत के बाद यहां पर परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। हर तरफ चीख पुकार ही सुनाई दे रही है। बता दें कि दिल्ली में बीते कई दिनों से लगभग सारे ही अस्पतालों में ऑक्सीजन की भीषण कमी हो रही है। कई बार तो पुलिस को ग्रीन कॉरिडोर बना कर ऑक्सीजन के ट्रक को अस्पताल पहुंचाना पड़ रहा है। इधर, अस्पताल के एमडी डॉ डीके बलुजा ने बताया कि अस्पताल में 20 कोरोना मरीजों की देर रात मौत हो गई है। यह सारी मौतें ऑक्सीजन की कमी के कारण हुई हैं। बकौल बलुजा प्रतिदिन 3600 लीटर कोटा है। विगत दो दिनों से ऑक्सीजन की आपूर्ति ही नहीं हुई। कल जब स्थिति बहुत बिगड़ी तो रात में 1500 लीटर ऑक्सीजन आपूर्ति की गई। इसके बार ऑक्सीजन का दबाव कम हो गया और 20 मरीजों की मौत हो गई। इस अस्पताल में 300 से अधिक कोरोना संक्रमित मरीज भर्ती हैं। इसमें से 80 फीसद से अधिक ऑक्सीजन पर हैं। सुबह अस्पताल में अगले 45 मिनट का ही ऑक्सीजन और बचा था अब ताजा अपडेट के मुताबिक अस्पताल में एक ट्रक ऑक्सीजन एवं कुछ सिलेंडर की व्यवस्था हुई है। अप्रत्यक्ष तौर पर ही सही, लेकिन दिल्ली सरकार भी यह मान रही है कि कुछ अस्पताल आक्सीजन के आंकड़ों को लेकर गड़बड़ी कर रहे हैं।

कोरोना : एक दिन में 3,46,786 नये मरीज, 2,624 मौत

नई दिल्ली। देश में कोविड-19 के एक दिन में 3,46,786 नए मामले सामने आने के साथ संक्रमण के कुल मामले बढ़कर 1,66,10,481 हुए। वहीं 2,624 संक्रमितों की मौत होने से मृतकों की संख्या बढ़कर 1,89,544 हुई। देश में कोविड-19 के उपचाराधीन मरीजों की संख्या 25,52,940 है। भारत ने पिछले 24 घंटों में 3,46,786 नए मामलों और 2,624 मौतों की वृद्धि देखी। ताजा घातक घटनाओं के साथ, भारत की मृत्यु दर 1,89,544 हो गई है। कोविद -19 संक्रमण के कारण सबसे अधिक मौतें महाराष्ट्र (773) में हुईं, इसके बाद दिल्ली में 348 लोगों की मौत हुई। देश में 25,52,940 सक्रिय कोविड -19 मामले हैं और पिछले 24 घंटों में 2,19,838 वायरस संक्रमण से ठीक हुए हैं। पिछले 24 घंटों में दैनिक कोविड -19 मामलों में सबसे अधिक योगदान देने वाले शीर्ष पांच राज्यों में 66,836 मामले महाराष्ट्र के बाद, 36,605 मामलों के साथ उत्तर प्रदेश, 28,447 मामलों के साथ केरल, 26,962 मामलों के साथ कर्नाटक और 24,331 मामलों के साथ दिल्ली हैं। इन पांच राज्यों ने नए कोविड -19 मामलों में 52.82 प्रतिशत जोड़े, अकेले महाराष्ट्र में नए मामलों के 19.27 प्रतिशत मामलों के लिए जिम्मेदार थे। मिजोरम में बीते 24 घंटे में कोविड-19 के 63 नए मामले सामने आने के साथ राज्य में संक्रमण के कुल मामले बढ़कर 5,283 हो गए। एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 54 मामले संक्रमितों के संपर्कों का पता लगाने के दौरान सामने आए जबकि नौ मरीजों ने विभिन्न स्थानों की यात्रा की थी। महाराष्ट्र के ठाणे जिले में कोरोना वायरस से संक्रमण के 5,092 नए मामले सामने आए और इसके साथ यहां संक्रमित लोगों की कुल संख्या बढ़कर 4,41,184 हो गयी। एक वरिष्ठ अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि नए मामले शुक्रवार को सामने आए। उन्होंने बताया कि एक दिन में 56 मरीजों की मौत हो जाने से मृतकों की कुल संख्या बढ़कर 7,186 तक पहुंच गयी।

ऑक्सीजन संकट पर दिल्ली हाईकोर्ट सख्त, बोला

अगर कोई सप्लाई रोकता है तो हम उसे बख्शेंगे नहीं, फांसी पर लटका देंगे

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने शनिवार को कहा कि अगर केंद्र, राज्य या स्थानीय प्रशासन में कोई अधिकारी ऑक्सीजन सप्लाई में अड़चन डाल रहा है, तो हम उसे बख्शेंगे नहीं, उसे फांसी पर लटका देंगे। जस्टिस विपिन सांघी और जस्टिस रेखा पल्ली की बेंच की ओर से उक्त टिप्पणी महाराजा अग्रसेन अस्पताल की एक याचिका पर सुनवाई के दौरान आई है। कोरोना महामारी के दौरान ऑक्सीजन की कमी के चलते मरीजों की सांसों पर आए संकट को देखते हुए महाराजा अग्रसेन अस्पताल ने जल्द से जल्द ऑक्सीजन दिलाने के लिए दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका दायर की है। हाईकोर्ट ने दिल्ली सरकार से कहा कि वह बताए कि कौन ऑक्सीजन की आपूर्ति को बाधित कर रहा है और कहा कि हम उस व्यक्ति को लटका देंगे। बेंच ने कहा कि हम किसी को भी नहीं बख्शेंगे। कोर्ट ने दिल्ली सरकार से कहा कि वह स्थानीय प्रशासन के ऐसे अधिकारियों के बारे में केंद्र को भी बताए ताकि वह उनके खिलाफ कार्रवाई कर सके। सुनवाई के दौरान दिल्ली सरकार की ओर से पेश हुए वरिष्ठ वकील राहुल मेहरा ने हाईकोर्ट से कहा कि जो कुछ भी चल रहा है, हम उसे संभालने की कोशिश कर रहे हैं, हम ऑक्सीजन की आपूर्ति करेंगे, हालांकि, हम हवा से ऑक्सीजन नहीं बना सकते हैं। हाईकोर्ट ने दिल्ली सरकार से कहा कि जिम्मेदारी उन पर भी आती है। इस दौरान हाईकोर्ट ने दिल्ली सरकार से ऑक्सीजन प्लांट स्थापित करने को कहा है। वकील राहुल मेहरा ने दिल्ली हाईकोर्ट से कहा कि दिल्ली को 480 मीट्रिक टन ऑक्सीजन का आवंटन जल्द किया जाए। उन्होंने कहा कि अगर हम व्यवस्था को क्रम में नहीं रखेंगे तो पूरी व्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी। राहुल मेहरा ने हाईकोर्ट को सूचित किया कि हमारे कोटा 480 मीट्रिक टन के बावजूद शुक्रवार को दिल्ली को लगभग 296 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की आपूर्ति हुई थी। उन्होंने यह भी कहा कि अगर हमें 480 मीट्रिक टन आवंटित ऑक्सीजन नहीं मिली तो 24 घंटे में पूरी फंक्शनिंग ठप हो जाएगी। इस पर दिल्ली हाईकोर्ट ने केंद्र सरकार से पूछा है कि दिल्ली में 480 मीट्रिक टन ऑक्सीजन का आवंटन कब किया गया है। कोर्ट का कहना है कि दिल्ली को ऑक्सीजन की सुचारू और पूर्ण रूप से आवंटित आपूर्ति कई समस्याओं को हल कर सकती है।

कोरोना की सुनामी के बीच हरकत में केंद्र सरकार सिंगापुर से विमानों से मंगा रही ऑक्सीजन टैंकर

नई दिल्ली। देश में कोरोना वायरस के मामलों ने चारों ओर तबाही मचा दी है। दिल्ली हाई कोर्ट ने शनिवार को सुनवाई करते हुए

कहा है कि यह लहर नहीं, बल्कि सुनामी है। कोरोना के फैलते संक्रमण के बीच केंद्र सरकार भी हरकत में आ गई है। केंद्र विदेश से ऑक्सीजन सप्लाई के लिए टैंकर मंगवा रही है। गृह मंत्रालय ने जानकारी दी है कि सिंगापुर से चार क्रायोजेनिक (कम तापमान बनाए रखने में सक्षम) टैंकर विमानों से मंगाए जा रहे हैं जिनका इस्तेमाल ऑक्सीजन को देश के विभिन्न हिस्सों में पहुंचाने के लिए किया जाएगा। मालूम हो कि देश के कई अस्पतालों में ऑक्सीजन की कमी देखी जा रही है, जिसके चलते कुछ मरीजों की भी जान जा चुकी है।

कोरोना से लड़ने के लिए सबसे अधिक जरूरी ऑक्सीजन को ले जाने वाले इन टैंकर्स को भारतीय वायुसेना के सी-17 एयरक्राफ्ट से लेकर आया जा रहा है। यह एयरक्राफ्ट शनिवार शाम को पानगढ़ एयरबेस पहुंचेगा। सी-17 एयरक्राफ्ट ने हिंडन एयर बेस से सुबह दो बजे उड़ान भरी थी, जिसके बाद वह लंबा सफर तय करके सिंगापुर के चांगी इंटरनेशनल एयरपोर्ट सुबह 7:45 बजे पहुंचा। देश में ऑक्सीजन की कमी के बीच भारतीय वायुसेना भी इसे दूर करने के लिए सामने आई है। वायुसेना के विमान ऑक्सीजन टैंकर्स, मेडिकल पर्सनल आदि को एक जगह से दूसरी जगह ले जा रहे हैं, जिससे कम समय में जरूरी मदद पहुंचाई जा सके। केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को देश में वर्तमान महामारी की स्थिति को लेकर एक रिव्यू मीटिंग भी की है, जिसमें कोरोना से लड़ने को लेकर चर्चा की गई। सिंगापुर के अलावा, केंद्र सरकार यूएई से भी ऑक्सीजन टैंकर्स को एयरलिफ्ट करवाने पर विचार कर रही है। उधर, देश में भारतीय वायुसेना के एयरक्राफ्ट्स पहले से ही ऑक्सीजन को अन्य स्थानों पर पहुंचा रहे हैं।

पीएम मोदी ने बांटे 5000 गांवों में 4 लाख से ज्यादा संपत्ति मालिकों को ई-प्रापर्टी कार्ड

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पंचायती राज दिवस के मौके पर थोड़ी देर पहले ही पांच हजार गांवों में चार लाख से ज्यादा संपत्ति मालिकों को ई-प्रापर्टी कार्ड जारी किए हैं। इस मौके पर पीएम मोदी ने अपने संबोधन में कई बातों का जिक्र किया। पीएम मोदी ने कहा कि इस वर्ष हम आजादी के 75वें वर्ष में प्रवेश करने वाले हैं। हमारे सामने चुनौतियां जरूर हैं, लेकिन विकास का पहिया हमें तेज गति से आगे बढ़ाते रहना है। आप भी अपने गांव के विकास के लक्ष्य तय करें और तय समयसीमा में उन्हें पूरा करें।

पंचायती राज दिवस के मौके पर पीएम मोदी ने कहा कि पंचायती राज दिवस का ये दिन ग्रामीण भारत के नवनिर्माण के संकल्पों को दोहराने का एक महत्वपूर्ण अवसर होता है। ये दिन हमारी ग्राम पंचायतों के योगदान और उनके असाधारण कामों को देखने, समझने और उनकी सराहना करने का भी दिन है। हाल में अनेक राज्यों में पंचायत चुनाव संपन्न हुए हैं और बहुत जगह चल भी रहे हैं इसलिए आज हमारे साथ बहुत से नए साथी भी हैं। मैं सभी नए जनप्रतिनिधियों को भी बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

इस मौके पर पीएम मोदी ने कहा कि आप सभी ने पिछले साल उडश्क्ळ को गाँवों तक पहुँचने से न केवल रोका बल्कि सभी को शिक्षित भी किया। उन्होंने आगे कहा कि इस साल, हमें फिर से इसी तरह की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है और हमें वायरस को अपने गांवों तक पहुंचने से रोकना चाहिए। पीएम मोदी ने कहा कि आज गांव और गरीब को उसके घर का कानूनी दस्तावेज देने वाली बहुत ही बड़ी और अहम योजना स्वामित्व योजना को भी पूरे देश में लागू किया गया है। उन्होंने कहा कि एक साल पहले जब हम पंचायती राज दिवस के लिए मिले थे, तब पूरा देश कोरोना से मुकाबला कर रहा था। तब मैंने आप सभी से आग्रह किया था कि आप कोरोना को गांव में पहुंचने से रोकने में अपनी भूमिका निभाएं।

संकट के बीच गांधीनगर में ऑक्सीजन प्लांट का उद्घाटन, शाह बोले- अन्य राज्यों को मिलेगी मदद

नई दिल्ली। देश में इस वक्त कोरोना के बढ़ते मामलों के चलते ऑक्सीजन संकट पैदा हो गया है। बदतर होती स्थिति के बीच गृहमंत्री अमित शाह ने आज गुजरात में गांधीनगर के आयुर्वेदिक अस्पताल में ऑक्सीजन प्लांट का उद्घाटन किया। इस दौरान उनके साथ प्रदेश के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी और उपमुख्यमंत्री नीतिन पटेल भी मौजूद रहे। अमित शाह ने इश दौरान दूसरे राज्यों को ऑक्सीजन पहुंचाने की भी बात कही।

पीएम केयर फंड से चलाया गया अभियान- गृह मंत्री ने कहा कि पीएम केयर फंड से ऑक्सीजन प्रदान करने के लिए देशभर में विशेष अभियान चलाया गया, जिसके तहत गुजरात में 11 नए पीएसए ऑक्सीजन संयंत्र स्थापित किए गए हैं। गुजरात में उत्पादित ऑक्सीजन की अतिरिक्त मात्रा अन्य राज्यों में पहुंचाई जाएगी। बता दें कि देश में इस वक्त कोरोना वायरस की तीसरी लहर चल रही है। लगातार तीन लाख से ज्यादा मामले देश में दर्ज किए गए जा रहे है। स्थिति बेकाबू होती जा रही है। हाहाकार जैसे बन रहे हालात के चलते अस्पतालों में स्थिति बिगड़ रही है। देश के अधिकतर राज्यों में मरीजों को बेड, ऑक्सीजन, वेंटिलेटर भी समय पर नहीं मिल पा रहे है। स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि ऑक्सीजन की कमी के चलते मरीजों की जान जा रही है। ऐसे में सरकार की तरफ से भी हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं कि मरीजों को सभी सुविधाएं मिले। कोरोना के खिलाफ लड़ाई में कई राज्यों की तरफ से ऑक्सीजन की कमी का मुद्दा उठाने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कहा था कि जल्द ही ऑक्सीजन की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए रेलवे और वायुसेना को भी लगाया है। इस दौरान पीएम ने कहा था कि ऑक्सीजन की सप्लाई में लगने वाले समय को कम करने के लिए युद्धस्तर पर काम किया जा रहा है।

दिल्ली में ऑक्सीजन संकट गहराया एम्स की इमरजेंसी में भी भर्ती बंद

नई दिल्ली। दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) की इमरजेंसी में भी शनिवार को ऑक्सीजन की कमी के चलते नए मरीजों को भर्ती करने पर रोक लगा दी गई है। ऐसा ही नजारा कई और सरकारी और प्राइवेट अस्पतालों में भी देखने को मिल रहा है। कई अस्पतालों में ऑक्सीजन खत्म होने के कगार पर पहुंच गई है।

वहीं, दिल्ली के सरोज सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में ऑक्सीजन खत्म होने के कगार पर है। अस्पताल के कोविड प्रभारी ने शनिवार को बताया कि हमें अभी तक बैकअप ऑक्सीजन की सप्लाई नहीं मिली है। हमारे पास 70 मरीज हैं, जो गंभीर स्थिति में हैं और उन्हें ऑक्सीजन की जरूरत है। अगर हमें ऑक्सीजन की आपूर्ति नहीं होती है तो बड़ी आपदा हो सकती है। हमने मरीजों को छुट्टी देनी शुरू कर दी है और ऑक्सीजन की कमी के कारण हम नए मरीजों को भर्ती करना बंद कर दिया है। उन्होंने कहा कि ऑक्सीजन के बिना हम मरीजों का कैसे इलाज करें। वहीं, प्रीत विहार स्थित मैट्रो अस्पताल में भी मरीजों को छुट्टी देने के लिए कहा जा रहा है। यहां भी ऑक्सीजन खत्म होने के कगार पर पहुंच गई है।

बत्रा अस्पताल के कार्यकारी निदेशक डॉ.सुधांशु ने कहा कि हमारे अस्पताल में दोपहर 2 बजे ऑक्सीजन पूरी तरह से खत्म हो गई है। हमें कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही है क्योंकि पाइपलाइन में भी ऑक्सीजन की सप्लाई नहीं है। हम इस मुश्किल वक्त में अपने मरीजों के लिए प्रार्थना करते हैं। हमारे अस्पताल में दोपहर 2 बजे ऑक्सीजन पूरी तरह से खत्म हो गया है। हमें कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही है क्योंकि पाइपलाइन में भी ऑक्सीजन की सप्लाई नहीं है। दिल्ली सरकार के लोक नायक जय प्रकाश (एलएनजेपी) अस्पताल के निदेशक डॉ. सुरेश कुमार ने शनिवार को बताया कि हमारे अस्पताल में सभी आईसीयू बेड पिछले 4-5 दिनों से भरे हुए हैं। कुछ गंभीर रोगियों को ऑक्सीजन स्तर को बनाए रखने के लिए प्रति मिनट 40-50 लीटर ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है।

लखनऊ व वाराणसी में शीघ्र पूरा कराएं डीआरडीओ के कोविड अस्पताल का निर्माण : सीएम योगी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कोरोना वायरस से संक्रमित होने के बाद भी उत्तर प्रदेश की जनता के दुःख दर्द में साथ खड़े हैं। शनिवार को भी टीम-11 के साथ कोरोना वायरस संक्रमण की स्थिति पर समीक्षा बैठक में बताया कि लखनऊ व वाराणसी में डीआरडीओ के कोविड अस्पताल का निर्माण शीघ्र पूरा होगा। सभी अधिकारी काम को जल्द पूरा कराने में लगें।

लखनऊ में मुख्यमंत्री के सरकारी आवास से अपने सरकारी आवास से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से टीम11 के साथ समीक्षा में उन्होंने कहा कि डीआरडीओ के सहयोग से लखनऊ और वाराणसी में कोविड अस्पताल की स्थापना की कार्यवाही पूर्ण होने वाली है। सभी आवश्यक तथा आधुनिक चिकित्सकीय सुविधाओं से युक्त इन दोनों अस्पतालों के क्रियाशील होने से प्रदेश के चिकित्सा संसाधन और सुदृढ़ होंगे। स्वास्थ्य विभाग इन दोनों कोविड अस्पताल के सहज संचालन के लिए आवश्यक प्रशिक्षित मानव संसाधन आदि के संबंध में व्यवस्था कर ले।

सार्वजनिक हो बेड की उपलब्धता की जानकारी: सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सभी अस्पतालों में आमजन को बेड की उपलब्धता की समुचित जानकारी उपलब्ध कराई जाए। प्रदेश में ऐसे सभी हॉस्पिटल जहां कोरोना संक्रमित मरीजों का इलाज हो रहा है,

प्रत्येक दिन में दो बार अस्पताल में रिक्त बेड का विवरण सार्वजनिक करें। यह विवरण जिले के इंटीग्रेटेड कंट्रोल एंड कमांड सेंटर के पोर्टल पर भी अपलोड कराया जाए। बेड का आवंटन पूरी पारदर्शिता के साथ किया जाना चाहिए। सभी जिला प्रशासन इस व्यवस्था को तत्काल प्रभाव से लागू कराएं। स्वास्थ्य मंत्री और चिकित्सा शिक्षा मंत्री प्रदेश के सभी जिलों इस स्थिति की आज विस्तृत समीक्षा करें।

कैडिला से मिला 18000 वॉयल रेमडेसिविर : मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में रेमडेसिविर तथा अन्य जीवन रक्षक दवाओं का वितरण पारदर्शी रूप से किया जाए। कैडिला कम्पनी से 18,000 वॉयल रेमेडेसीवीर और प्राप्त हो गया है। हर दिन इसकी आपूर्ति बढ़ती जा रही है। मांग के अनुसार संबंधित कंपनियों को और डिमांड भेजी जाए। आपूर्ति के साथ-साथ इसकी वितरण व्यवस्था को और बेहतर बनाने की आवश्यकता है। प्रदेश के सभी जरूरतमंदों को यह सुविधाएं समान रूप से उपलब्ध करायी जाएं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में ऑक्सीजन की सुचारु उपलब्धता सुनिश्चित कराई जा रही है। बोकारो से भारतीय रेल की विशेष ऑक्सीजन रेल उत्तर प्रदेश पहुंच चुकी है। मोदीनगर, काशीपुर, पानीपत और रुड़की प्लांट से भी प्रदेश को ऑक्सीजन आपूर्ति हो रही है। इस ऑक्सीजन का पारदर्शीता के साथ सुचारु वितरण कराया जाए। उन्होंने कहा कि बहराइच, फिरोजाबाद आदि छोटे जिलों को उनके मंडल मुख्यालयों से ऑक्सीजन आवंटित कराया जाए।

सीबीआई का अनिल देशमुख पर शिकंजा, एजेंसी ने नागपुर के घर पर छापे मारे

नागपुर। सीबीआई महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख के आवास पर और यहां अन्य स्थानों पर छापे मार रही है। ये छापेमारी भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर उनके खिलाफ मामला दर्ज करने के बाद की जा रही है। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के सूत्रों ने बताया कि एजेंसी की एक टीम शुक्रवार रात नागपुर पहुंची थी और शनिवार सुबह से छापेमारी की जा रही है। देशमुख का घर नागपुर के सिविल लाइन्स इलाके में जीपीओ स्कॉयर में है। उन्होंने बताया कि सीबीआई की टीम देशमुख के निर्वाचन क्षेत्र कातोल कस्बे का भी दौरा कर सकती है जो नागपुर से 60 किलोमीटर दूर है। सीबीआई ने देशमुख के खिलाफ मुंबई के पूर्व पुलिस आयुक्त परमबीर सिंह द्वारा लगाए गए आरोपों की जांच करने संबंधी बंबई उच्च न्यायालय के आदेश पर प्रारंभिक जांच शुरू करने के बाद एक प्राथमिकी दर्ज की थी। सीबीआई मुंबई में देशमुख से जुड़े परिसरों के अलावा कई अन्य स्थानों पर तलाश कर रही है।

जस्टिस एनवी रमना बने भारत के मुख्य न्यायाधीश

नई दिल्ली। जस्टिस एनवी रमना ने भारत के नए मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ले ली है। उन्हें राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने शपथ दिलवाई। शपथ समारोह राष्ट्रपति भवन में हुआ। एनवी रमना वर्तमान मुख्य न्यायाधीश एसए बोबडे की जगह लेंगे। 23 अप्रैल को बोबडे के सेवानिवृत्त होने के बाद रमना ने भारत के 48 में मुख्य न्यायाधीश के तौर पर प्रभार संभाल लिया है। जस्टिस रमना 26 अगस्त 2022 तक देश के मुख्य न्यायाधीश रहेंगे। आपको बता दें कि आंध्र प्रदेश में कृष्णा जिले के पुन्नावरम गांव में 27 अगस्त 1957 में जन्मे न्यायाधीश रमना ने 10 फरवरी 1983 को वकील के तौर पर पंजीकरण कराया था। वह 27 जून 2000 को आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के स्थायी न्यायाधीश नियुक्त हुए और उन्होंने 10 मार्च 2013 से 20 मई 2013 तक आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश के तौर पर काम किया।

संपादकीय

व्यवस्था का संकट

अस्पतालों में ऑक्सीजन की कमी और आग जैसे हादसे मरीजों की मौत का बड़ा कारण बनने लगें तो यह बहुत ही अफसोस की बात है। ज्यादा चिंता की बात तो यह है कि पिछले दिनों ऐसी कई घटनाएं सामने आई हैं। हालांकि ऑक्सीजन की कमी और अस्पतालों में आग की घटनाएं दोनों अलग मामले हैं। लेकिन दोनों मामलों में पीड़ित तो मरीज ही हैं। सवाल है कि अस्पतालों में होने वाली ऐसी अकाल मौतों के लिए किसको जिम्मेदार ठहराया जाए। अस्पताल प्रशासन, सरकार या फिर वे दूसरे नियामक जिन पर अस्पतालों के प्रबंधन से लेकर हर बात पर निगरानी रखने की जिम्मेदारी बनती है। चौबीस घंटे में तीन ऐसी घटनाएं सामने आईं जो व्यवस्था के रवैए पर सवाल खड़े करती हैं। इसमें कोई शक नहीं कि पिछले एक साल में अस्पतालों पर दबाव काफी बढ़ा है, लेकिन मरीजों की सुरक्षा तो सर्वोपरि है। ताजा मामला दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल है जहां चौबीस घंटे में पच्चीस कोरोना मरीजों की मौत हो गई। जैसा कि बताया जा रहा है कि ये सभी पच्चीस मरीजों ऑक्सीजन की कमी का शिकार हुए। मध्य प्रदेश के जबलपुर में भी एक अस्पताल में ऑक्सीजन खत्म हो जाने पांच लोगों ने दम तोड़ दिया। उधर, मुंबई एक अस्पताल में आग से फिर तेरह लोगों की मौत हो गई। सुप्रीम कोर्ट और दिल्ली हाई कोर्ट की कड़ी फटकार के बाद ऑक्सीजन की कमी के मुद्दे पर केंद्र और राज्य सरकारें हरकत में आईं। उत्पादन बढ़ाने और निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। ऑक्सीजन की कालाबाजारी करने वालों के खिलाफ अभियान छेड़ने की बात भी कही जा रही है। लेकिन सवाल यह है कि ऑक्सीजन की फौरी जरूरत कैसे पूरी हो? जिस मरीज को ऑक्सीजन की जरूरत है वह तो कुछ मिनट भी इसका इंतजार नहीं कर सकता। अगर जरूरतमंदों को समय पर ऑक्सीजन नहीं मिल पा रही है तो इसके लिए सीधे तौर पर सरकारों को जिम्मेदार माना जाना चाहिए। यह ठीक है कि ऑक्सीजन का उत्पादन बढ़ाने, भरे सिलेंडरों को देश के दूसरे हिस्सों में पहुंचाने और फिर अस्पतालों में आपूर्ति का इंतजाम रातों-रात नहीं हो सकता। लेकिन सरकारें इस तरह के तर्क देकर बच तो नहीं सकतीं! कैसे भी हो, उन्हें जल्द से जल्द ये इंतजाम करने ही होंगे। मुंबई के अस्पताल में आग कोई सामान्य घटना नहीं है। कुछ ही दिनों के भीतर अस्पतालों में आग का यह तीसरा हादसा है। इस बार फिर एक कोविड अस्पताल में आग की घटना में तेरह लोगों की मौत हो गई। कारण बताया जा रहा है कि अस्पताल के वातानुकूलन संयंत्र में चिंगारी की वजह से आग लगी। सरकार ने जांच के आदेश दे दिए हैं। मृतकों के परिजनों को मुआवजे का एलान भी कर दिया गया है। लेकिन इससे इस सवाल का जवाब नहीं मिल जाता कि ऐसे हादसों की जिम्मेदारी किस पर डाली जाए? ऐसे हादसों को रोकने के लिए जिम्मेदार लोगों को चौकस को करना ही पड़ेगा। पिछली घटनाओं से अगर सबक लिया जाता तो यह दिन नहीं देखना पड़ता। भले ही इस हादसे में तेरह लोगों की मौत हुई हो, लेकिन मौतों के आंकड़े को छोटा या बड़ा मानना ठीक नहीं है। हर जीवन अमूल्य होता है। इसलिए जीवन की सुरक्षा सरकारों का पहला दायित्व बनता है। ऑक्सीजन की कमी हो या आग की घटनाएं, हम देख रहे हैं कि हमारा व्यवस्था तंत्र निष्ठुर बन चुका है।

हरकत ये बचकानी!

सीएम होकर तोड़ रहे ।
आप प्रोटोकॉल ।।
क्या ऐसी मजबूरी ?
किए जो कमाल ।
बातें जो कुछ आपसी ।
किए क्यों प्रसार ?
ठीक नहीं हालात यदि ।
फिर से करें विचार ।।
हरकत ये बचकानी ।
फिर माफीनामा ।।
भूल हुई है सच में ।
या हुआ है ड्रामा ?
मयार्दा का रखकर ख्याल ।
हो हर पल सहयोग ।।
ठीक नहीं ये रार ।
समझ रहे हैं लोग ।।

–कृष्णेन्द्र राय

हनुमान जयंती और हनुमानजी की उपासना

छोटे से लेकर बडों तक सभी को समीप के प्रतीत होनेवाले भगवान अर्थात पवनपुत्र! पवनपुत्र का अन्य सर्वपरिचित नाम है हनुमान । शक्ति, भक्ति, कला, चातुर्य तथा बुद्धिमत्ता में श्रेष्ठ होते हुए भी प्रभु रामचंद्रजी के चरणों में सदैव लीन रहनेवाले हनुमान के जन्म का इतिहास, हनुमान जयंती पूजाविधि तथा हनुमान उपासना का शास्त्र सनातन संस्था द्वारा संकलित इस लेखमें जान कर लेंगे । हनुमान जयंती पर अन्य दिनों की तुलना में 1 सहस्रगुना हनुमान तत्त्व कार्यरत रहता है । उसका लाभ लेने के लिए उस दिन हनुमानजी का ह्यश्री हनुमते नमः । यह जप अधिकाधिक करें । वर्तमान में कोरोना की पार्श्वभूमि पर अनेक स्थान पर यह उत्सव सदा की भांति मनाने के लिए मयार्दाएं रह सकती हैं । प्रस्तुत लेख में कोरोना के संकटकाल में निबंधों में भी हनुमान जयंती कैसे मना सकते हैं यह भी समझकर लेनेवाले हैं । हनुमान जयंती की पार्श्वभूमि पर बलोपासना के साथ भगवान की भक्ति करने का संकल्प करेंगे !

1. जन्म का इतिहास : राजा दशरथजी ने पुत्रप्राप्ती के लिए 'पुत्रकामेष्टि यज्ञ' किया। तब अग्निदेव यज्ञ से प्रकट हुए और दशरथ की रानियों के लिए खीर (यज्ञ में अवशिष्ट प्रसाद) प्रदान किया। अंजनी, जो दशरथ की रानी की तरह तपस्या कर रही थी, उन्हे भी यह प्रसाद मिला और इसी कारण हनुमान का जन्म हुआ। उस दिन चैत्र पूर्णिमा थी। यह दिन 'हनुमान जयंती' के रूप में मनाया जाता है।

2. पवनपुत्र मारुतिने 'हनुमान' नाम कैसे धारण किया ? – वाल्मीकि रामायण में किष्किंधा कांड, सर्ग 66 में इस विषय में दिया है क अंजनी को वीर्यवान्, बुद्धिसंपन्न, महातेजस्वी, महाबली और महापराक्रमी पुत्र हुआ । जन्म होने के बाद उगते सूर्य का लाल गोला देखकर उसे पका फल समझकर हनुमान ने आकाश में सूर्य की दिशा में उडान भरी । इस पर इंद्र ने क्रोधित होकर उन पर अपना वज्र फेंका । विशाल पर्वतों का चूर्ण करनेवाले सामर्थ्यवान हनुमानजी ने केवल इंद्र के वज्र को मान देने के लिए उसे अपनी ठोडी पर झेल लिया और झूठमूठ के लिए मूर्छित हो गए । तब से उन्होंने हनुमान नाम धारण किया । हनुमान शब्द की व्युत्पत्ति इसप्रकार है हनुः अस्य अस्ति इति । अर्थात जिसकी ठोडी विशेष है, ऐसे वज्रांग (वज्र समान अंग है जिसका) कहलाने लगे । उसी का अपभ्रंश होकर बजरंग नाम पडा । हनुमान ने जन्म से ही सूर्यबिंब की ओर भरी उडान से कुंडलिनी शक्ति जागृत हो गई थी ।

3. हनुमान जयंती की पूजाविधि : हनुमानजी का जन्मोत्सव प्रातः सूर्योदय के समय मनाया जाता है । हनुमानजी की मूर्ति अथवा प्रतिमा की यथासंभव पंचोपचार अथवा षोडशोपचार पद्धति से पूजा करनी चाहिए । सूर्योदय के समय शंखनाद कर पूजा आरंभ करें । भोग लगाने के लिए सोंठ और चीनी का मिश्रण ले सकते हैं । पश्चात वह मिश्रण प्रसाद के रूप में सबको बांट दें । हनुमानजी को मदार (रुई) के फूल-पत्तों का हार अर्पण करें । पूजा के उपरांत श्रीराम एवं श्रीहनुमान की आरती करें ।

4. हनुमानजी की उपासना के अंतर्गत विविध कृतियां : हनुमानजी के मूर्ति को तेल, सिंदूर, मदार के पत्ते व फूल अर्पण करने का कारण : ऐसा कहते हैं कि देवता को जो वस्तु भाती है, वही उन्हें पूजा में अर्पण की जाती है । तेल, सिंदूर एवं मदार के फूल तथा पत्ते इन वस्तुओं में हनुमानजी के सूक्ष्मातिसूक्ष्म कण, जिन्हें पवित्रक कहते हैं, उन्हें आकृष्ट करने की क्षमता होती है । अन्य वस्तुओं में ये पवित्रक आकृष्ट करने की क्षमता अल्प होती है । इसीलिए हनुमानजी को तेल, सिंदूर एवं मदार के पुष्प-पत्र इत्यादि अर्पण करते हैं ।

कुछ स्थानोंपर हनुमानजीको नारियल भी चढाते हैं । हनुमानजीकी पूजाविधिमें केवडा, चमेली या अंबर, इन उदबत्तियोंका उपयोग करें । हनुमानजीकी अल्पसे अल्प पांच या पांचकी गुणामें परिक्रमाएं करें । स्थानके अभाव अथवा अन्य कारणवश परिक्रमा करना संभव न हो, तो अपने चारों ओर तीन बार गोल घूमकर परिक्रमा लगाएं ।

आध्यात्मिक कष्ट एवं शनि ग्रह पीडा निवारणार्थ हनुमानजी की उपासना : शनि की साढेसाती के प्रभाव को न्यून (कम) करने के लिए हनुमानजी की पूजा करते हैं । आसुरी शक्तींया तथा आध्यात्मिक कष्ट से रक्षा करने हेतु हनुमानजी की उपासना विशेष फलदायी होती है क कष्ट को समूल अल्प करने के लिए हनुमानजी का नामजप निरंतर करना, यही एक उत्तम साधन है ।

नामजप एवं हनुमान चालीसा का पाठ : हनुमान जयंती के दिन नित्य की तुलना में हनुमानतत्त्व 1 सहस्र गुना सक्रिय रहता है । उससे अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए घर में सब लोग एक साथ बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें । शेष समय श्री हनुमते नमः नामजप अधिकाधिक करें !

5. कोरोना काल में निर्बंध होने से हनुमान जयंती ऐसे मनाएं !

अनेक भक्त हनुमान जयंती के उपलक्ष्य में प्रातः हनुमानजी के मंदिर में जाकर दर्शन करते हैं । सूर्योदय के समय हनुमान जन्म मनाया जाता है; परंतु कोरोना की पार्श्वभूमि पर की गई यातायात बंदी के कारण अनेक स्थान पर धार्मिक स्थल बंद हैं । इसलिए मंदिरों में जाकर दर्शन करना संभव नहीं है । ऐसे में हनुमान जयंती के उपलक्ष्य में घर पर ही श्री हनुमानजी की उपासना करें ।

1. कलियुग में नामस्मरण सर्वोत्तम साधना बताई गई है । हनुमान जयंती के दिन हनुमानतत्त्व अन्य दिनों की तुलना में 1 सहस्रगुना अधिक मात्रा में कार्यरत रहता है । उसका आध्यात्मिक स्तर पर लाभ होने के लिए ह्यश्री हनुमते नमःह्न यह नामजप अधिकाधिक भावपूर्ण करने का प्रयास करें ।

2. जिनके घर हनुमान जन्म मनाया जाता है, उनको प्रातः श्री हनुमानजी की पंचोपचार अथवा षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए । पूजा करने हेतु श्री हनुमानजी की मूर्ति अथवा प्रतिमा (चित्र) उपलब्ध न हो, तो किसी ग्रंथ के मुखपृष्ठ पर यदि हनुमानजी का छायाचित्र रहनेवाला कोई ग्रंथ अथवा ह्यश्री हनुमते नमःह्न नामपट्टी पूजा में रख सकते हैं । वह भी संभव न हो, तो पीढे पर रंगोली से ह्यश्री हनुमते नमःह्न लिख कर उसकी पूजा करें । शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध एवं उनसे संबंधित शक्ति एकत्र रहते हैं, ऐसा अध्यात्म का सिद्धांत हैं । उसके अनुसार हनुमानजी की मूर्ति में जो तत्त्व रहता है, वही शब्द में अर्थात श्री हनुमानजी के नामजप में भी होता है ।3. पूजा हेतु आवश्यक सामग्री मिलने में अडचन हो, तो उपलब्ध पूजासामग्री से ही हनुमानजी की भावपूर्ण पूजा करें । यदि कुछ पूजासामग्री उपलब्ध न हो, तो उसके स्थान पर अक्षता समर्पित करें । घर पर उपलब्ध हो, तो ईश्वर के सामने नारियल भी तोड सकते हैं । सोंठ का नैवेद्य दिखाना संभव न हो, तो अन्य मीठे पदार्थ का नैवेद्य दिखाएं । 6. बलोपासना कर हनुमानजी की कृपा प्राप्त करें !

धर्म-अधर्म की लडाई में महत्त्वपूर्ण देवता अर्थात हनुमानजी ! हनुमानजी ने त्रेतायुग में रावण के विरुद्ध युद्ध में प्रभु श्रीराम को सहकार्य किया जबकि द्वापारयुग में महाभारत के भयंकर लडाई में वह कृष्णार्जुन के रथ पर विराजमान था । हिंदुस्थान में मुगल सत्ता असीम अत्याचार कर रही थी, उस समय महाराष्ट्र में बलोपासना का महत्व अंकित करने हेतु समर्थ रामदासस्वामी ने हनुमानजी की मूर्ति की 11 स्थानों पर स्थापना की तथा हिंदुओं में ह्यहिंदवी स्वराज्यह्न की स्थापित करने की चेतना जगाई । कोरोना से जो विदारक परिस्थिति आज निर्माण हुई है, उससे बलोपासना का महत्त्व ध्यान में आता है । इसलिए हनुमानजयंती की पार्श्वभूमि पर बलोपासना के साथ भगवान की भक्ति करने का संकल्प करेंगे ।

कोरोना महामारी ने मानव को नहीं बल्कि मानवता को परास्त किया है

डॉ. नीलम महेंद्र

"इस समाज का हिस्सा होने पर हम शर्मिंदा हैं", यह बात बॉम्बे हाई कोर्ट ने महाराष्ट्र सरकार से महाराष्ट्र में कोरोना के हालात पर कही है। लेकिन कोरोना से उपजी विकट स्थिति से महाराष्ट्र ही नहीं पूरा देश जूझ रहा है। कोरोना की जिस लड़ाई को लग रहा था कि हम जीत ही गए अचानक हम कमजोर पड़ गए। कोरोना की शुरूआत में जब पूरे विश्व को आशंका थी कि अपने सीमित संसाधनों और विशाल जनसंख्या के कारण कोरोना भारत में त्राहिमाम मचा देगा, तब हमने अपनी सूझबूझ से महामारी को अपने यहाँ काबू में करके सम्पूर्ण विश्व को चौंका दिया था। रातों रात ट्रेनों तक में अस्थाई कोविड अस्पतालों और जाँच लैब का निर्माण करने से लेकर पीपीई किट, वेंटिलेटर, सैनिटाइजर और मास्क का निर्यात करने तक भारत ने कोविड से लड़ाई जीतने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

सबसे बड़ी बात यह थी कि भारत इतने पर नहीं रूका। भारत ने कोरोना के साथ इस लड़ाई को अंजाम तक पहुंचाने के लिए वैक्सीन का निर्माण भी कर लिया था। लगने लगा था कि कोरोना से इस लड़ाई में हम बहुत आगे निकल आए हैं लेकिन फिर अचानक से क्या हुआ कि परिस्थितियां हमारे हाथ से फिसलती गईं और हम हार गए। एक देश के रूप में, एक सभ्यता के रूप में, एक सरकार के रूप में, एक प्रशासनिक तंत्र के रूप में।

आज देश जिस स्थिति से गुजर रहा है वो कम से कम कोरोना की दूसरी लहर में तो स्वीकार नहीं हो सकती। हाँ, अगर कोरोना की पहली लहर में यह सब होता तो एक बार को समझा जा सकता था कि देश इन अप्रत्याशित परिस्थितियों के लिए तैयार ही नहीं था। लेकिन आज कहाँ गया वो इंफ्रास्ट्रक्चर जो कोरोना की पहली लहर में खड़ा किया गया था? कहाँ गए वो कोविड के अस्पताल कहाँ गए वो बड़े बड़े दावे जब वैज्ञानिकों ने पहले से ही कोविड की दूसरी लहर की चेतावनी दे दी थी तो यह लापरवाही कैसे हो गई? आज अचानक देश बेड और ऑक्सीजन की कमी का सामना क्यों कर रहा है? वो देश जिसकी दुनिया भर में फार्मेसी के क्षेत्र में 60 प्रतिशत से अधिक की हिस्सेदारी है, वो कोरोना में इस्तेमाल होने वाली दवाओं की किल्लत से क्यों जूझ रहा है? अधिकांश राज्य सरकारें और प्रशासन एक वायरस के आगे बौने क्यों दिखाई पड़ रहे हैं? दुर्भाग्य यह है कि बात प्रशासन और सरकारों के एक वायरस के आगे बेबस होने तक ही सीमित नहीं है, ये जमाखोरों और काला बाजारी करने वालों के आगे भी बेबस नजर आ रही हैं। देश के जो वर्तमान हालात हैं उनमें केवल स्वास्थ्य व्यवस्थाएं ही कठघरे में नहीं हैं बल्कि प्रशासन और नेता भी कठघरे में हैं।

इसे क्या कहिएगा कि जब मध्य प्रदेश के इंदौर में कोरोना के मरीज ऑक्सीजन की कमी से अस्पताल में दम तोड़ रहे थे तो मानवता को ताक पर रखकर हमारे नेताओं में 30 टन ऑक्सीजन लाने वाले टैंकर के साथ फोटो खिंचवाने की होड़ लग जाती है। जब इंदौर शहर एक एक सांस के लिए मोहताज था, जब एक क्षण की सांस भी मौत को जिंदगी से दूर धकेलने के लिए बहुत थी, तब इन नेताओं के लिए तीन घंटे का फोटो सेशन भी कम पड़ रहा था। त्राहिमाम के इस काल में संवेदनहीनता की पराकाष्ठा यहीं तक सीमित नहीं रही। कभी सरकारी अस्पताल से वैक्सीन चोरी होने की खबर आई तो कभी कोरोना के इलाज में प्रयुक्त होने वाली दवाई रेमेडेसिविर चोरी होने की। कभी आम लोगों द्वारा ऑक्सीजन सिलिंडर लूटने की खबरें आईं तो कभी प्रशासन और सरकार की नाक के नीचे 750 से 1000 रूपए का इंजेक्शन 18000 तक में बिका। पेरासिटामोल जैसी गोली भी इस महामारी के दौर में 100 रुपए में बेची गई।

हालात ये हो गए कि विटामिन सी की गोली से लेकर नींबू तक के दाम थोक में वसूले गए। कालाबाजारी करने वालों के लिए तो जैसे कोरोना काल आपदा में अवसर बनकर आया। कुल मिला कर जिसे मौका मिला, सामने वाले की मजबूरी का फायदा सबने उठाया। क्या ये वो ही देश है जो कोरोना की पहली लहर में एकजुट था? क्या ये वो ही देश है जिसमें पिछली बार करोड़ों हाथ लोगों की मदद के लिए आगे आए थे? और जब ऐसे देश में प्राइवेट अस्पतालों में कोविड के इलाज के बिल जो लाखों में बनता है, एक परिवार को अपनी जीवन भर की कमाई और किसी अपने की जिंदगी में से एक को चुनने के लिए विवश होना पड़ता है तो उस समय वक्त भी ठहर जाता है। क्योंकि एक तरफ भावनाएं उफान पर होती हैं तो दूसरी तरफ वो संभवतः दम तोड़ चुकी होती हैं। और ऐसे संवेदनशील दौर में कुछ घटनाएं ऐसी भी सामने आती हैं जो भीतर तक झंझोर जाती हैं। नासिक के एक अस्पताल में जब ऑक्सीजन टैंकर लीक होने से ऑक्सीजन की सप्लाई में रुकावट आई और ऑक्सीजन सपोर्ट वाले मरीजों की हालत बिगड़ने लगी तो जीवित मरीजों के परिजनों में दम तोड़ चुके मरीजों के ऑक्सीजन सिलेंडर लूटने की होड़ लग गई। कुछ मरीजों के परिजन मर चुके लोगों के शरीर से ऑक्सीजन सिलेंडर निकाल कर अपनों के शरीर में लगा रहे थे तो कुछ मरीज खुद ही लगाने की कोशिश कर रहे थे।

जिंदगी और मौत के बीच का फासला मिटाने के लिए जब इंसानियत का कत्ल करना इंसान की मजबूरी बन जाए तो दोष किसे दें? स्वास्थ्य सेवाओं को परिस्थितियों को सरकार को प्रशासन को या फिर कोरोना काल को?

आज प्रत्येक संस्थान का कार्य सर्व प्रथम मानव जीवन को बचाने का है

कोरोना की दूसरी लहर से उपजे संकट का सामना करने के लिए मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक में प्रधानमंत्री ने यह सही कहा कि यदि हम सब एकजुट होकर काम करेंगे तो संसाधनों की कमी आड़े नहीं आएगी, लेकिन इसकी अनदेखी भी नहीं की जा सकती कि इस समय स्वास्थ्य संसाधन बेहद दबाव में हैं। इसके चलते ही अफरातफरी का माहौल है। कोरोना मरीज अस्पतालों में बेड की कमी से लेकर ऑक्सीजन तक की किल्लत का सामना कर रहे हैं। उन्हें कुछ दवाओं की तंगी से भी दो-चार होना पड़ रहा है। इस विकट स्थिति का निवारण करने के लिए न केवल युद्धस्तर पर जुटना होगा, बल्कि केंद्र और राज्यों से लेकर नागरिक प्रशासन और स्वास्थ्य सेवाओं के बीच उचित समन्वय भी कायम करना होगा। निःसंदेह संकट इसलिए और बढ़ गया है कि एक तो आवश्यक समन्वय का अभाव दूर नहीं हो पा रहा और दूसरे, चुनौतियों से पार पाने के लिए समय रहते किसी कारगर रणनीति का निर्माण नहीं किया जा सका। कम से कम अब तो ऐसा किया ही जाना चाहिए।

स्वतन्त्र भारत में स्वास्थ्य आपदा के ये दृश्य पहली बार देखे जा रहे हैं। इस महामारी पर काबू पाने के लिए राज्य आपस में ही आक्सीजन के लिए लड़ते भी देखे जा रहे हैं। एक भारत का सपना इस महामारी ने इस प्रकार बिखेर कर रख दिया है कि प्रत्येक राज्य को पहले अपने अस्पतालों में आक्सीजन की सप्लाई का मुद्दा संघीय ढांचे के सभी दायरों को तोड़ता हुआ नजर आ रहा है। गौर से देखा जाये तो भारत में ये चिकित्सा इमरजेंसी का समय चल रहा है जिसका संज्ञान प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने लिया है। प. बंगाल की अपनी चुनाव रैलियां रद्द करने की घोषणा करके उन्होंने देश के 130 करोड़? लोगों में यह विश्वास जमाने का प्रयास किया है कि संकट की इस घड़ी में वह नेतृत्व देने को तैयार हैं। आक्सीजन सप्लाई करने की व्यवस्था को पटरी पर लाने की गरज से उन्होंने सम्बन्धिक विभाग के आला अफसरों के साथ बैठक करके यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया है कि प्रत्येक राज्य को उसका आवंटित आक्सीजन कोटा उठाने में किसी प्रकार की बाधा न आने पाये।

आक्सीजन वितरण केन्द्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में ही आता है और प्रत्येक राज्य को इसका कोटा वही निर्धारित करती है परन्तु यह भी सत्य है कि दिल्ली, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश समेत कुछ राज्यों में कोरोना का दुष्प्रभाव बहुत तेज है। इसे देखते हुए ऐसे राज्यों का आक्सीजन कोटा बढ़ाने का भी निर्णय किया जा रहा है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि प्रत्येक राज्य को समझना होगा कि हर भारतीय की जान महत्वपूर्ण है। श्री मोदी के कमान संभालने से यह उम्मीद बंधती नजर आ रही है कि चिकित्सीय सेवाओं के प्रबन्धन में जो अराजकता का माहौल पिछले कुछ दिनों में बना है वह दूर होगा क्योंकि उनकी कार्य करने की प्रणाली ह्यसीधी कार्रवाईह्न के रूप में देखी जाती है। वैसे भी प्रधानमन्त्री किसी एक राज्य या किसी राजनीतिक दल का नहीं होता है बल्कि वह समूचे देश का और प्रत्येक नागरिक का प्रतिनिधि होता है। अतः जब विभिन्न राज्यों के बीच ही कशमकश का माहौल आक्सीजन को लेकर बन रहा है तो प्रधानमन्त्री का नेतृत्व सभी दिक्कतों को दूर करने वाला होगा और लोगों में पुनः विश्वास का माहौल बनाने में सहायक होगा। अतः यह समय आलोचना या प्रत्यालोचना का न होकर परस्पर सहयोग करने का है।

इन दिनों सभी जरूरतमंद अस्पतालों को ऑक्सीजन उपलब्ध कराने के लिए हरसंभव प्रयास हो रहे हैं, लेकिन अस्पतालों की अपनी सीमित क्षमता और ऑक्सीजन की मांग में बेहिसाब वृद्धि के कारण समस्याएं सिर उठाए हुए हैं। चूंकि देश के ज्यादातर अस्पताल सीमित मात्रा में ऑक्सीजन भंडारण क्षमता रखते हैं और आजकल उसकी खपत उम्मीद से कहीं अधिक बढ़ गई है, इसलिए चारों ओर उसकी कमी का शोर है। यह शोर इसलिए और बढ़ गया है, क्योंकि कई अस्पताल प्रबंधन ऑक्सीजन की कमी की गुहार अग्रिम रूप से करने लगे हैं। उनकी चिंता जायज है, लेकिन इससे कोरोना मरीजों और उनके स्वजन में दहशत कायम हो जाती है और फिर वह जंगल में आग की तरह फैलती है। अस्पतालों में ऑक्सीजन की खपत यकायक बहुत बढ़ जाने के बाद भी इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि जैसे-तैसे उसकी आपूर्ति हो जा रही है। अस्पतालों के प्रबंधन और केंद्र एवं राज्य सरकारों को यह देखना चाहिए कि आपाधापी की यह स्थिति कैसे जल्द खत्म हो, क्योंकि जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक संकट के बादल छंटने नहीं दिखेंगे। संकट को नियंत्रित करने के लिए यह भी आवश्यक है कि स्वास्थ्य संसाधनों पर दबाव कम हो। ऐसा तब होगा, जब कोरोना मरीजों की बढ़ती संख्या पर लगाम लगेगी। इसके लिए आम लोगों को संक्रमण से बचे रहने के लिए अपनी सावधानी का स्तर और अधिक बढ़ाना होगा। यह सबको समझना ही होगा कि जब संक्रमित होने वालों की संख्या में कमी आएगी, तभी वास्तविक राहत मिलेगी।

अशोक भाटिया, स्वतंत्र पत्रकार

ऑनलाइन शिक्षण योजना में सुधार की आवश्यकता!

कोरोना संक्रमण का हर क्षेत्र पर असर पड़ा है, शिक्षण उनमें से एक है !संक्रमण का खतरा इतना ज्यादा है कि बच्चों का स्कूल जाना और शिक्षा ग्रहण करना संभव नहीं है ,ऐसे में शिक्षण तकनीकों का विकास और नई तकनीकी बच्चों को कहा तक प्रेरित और शिक्षित कर पाएगी, यह मंथन का विषय है । ऐसे में ऑनलाइन लर्निंग ही एकमात्र विकल्प बनकर उभरा है । शिक्षा ग्रहण करने में सबसे ज्यादा समस्या प्राथमिक स्तर के छात्रों को हो रही है । कंप्यूटर या मोबाइल स्क्रीन पर अक्षर को लिखने की शुरूआत करना सीखना छोटे बच्चों के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है, अगर किसी के दो बच्चे हैं एक कक्षा नर्सरी में और दूसरा बच्चा कक्षा दो में है तो अभिभावक उसी समय कैसे दो बच्चों के साथ कंप्यूटर या मोबाइल स्क्रीन के सामने अपने दोनों बच्चों के साथ ऑनलाइन टीचिंग के वक्त बैठ सकते हैं । लगभग सारी कक्षाएं उसी वक्त चलती है और शिक्षक पढ़ा कर चला जाता है अब सारी जिम्मेदारी अभिभावक पर हो जाती है अपने दोनों बच्चों को सिखाने की । ऑनलाइन टीचिंग में शिक्षक 40 मिनट की क्लास में हर एक बच्चे पर 5 मिनट से ज्यादा नहीं दे पाता है, आप कह सकते हैं प्राथमिक स्तर के भी शिक्षक लेक्चर देकर चले जाते हैं जैसा कि बड़ी कक्षाओं में शिक्षा देने के लिए लेक्चर विधि का उपयोग किया जाता है बस नाम का शिक्षण हो रहा है लेकिन वाकई बच्चा सीख रहा है या नहीं सीख रहा है इस पर जोर नहीं दिया जा रहा है। ऑफलाइन क्लासरूम लर्निंग और ऑनलाइन लर्निंग में बहुत का फर्क है दोनों तरह की लर्निंग के लिए शिक्षण योजना में सुधार लाना होगा । बच्चों को सिखाने पर समय और देना होगा ऑनलाइन टीचिंग में । ना तो बच्चों को अच्छे से प्रार्थना कराई जाती है और ना ही पीटी कराई जाती है ! ऐसे में बच्चों के संपूर्ण विकास पर असर पड़ रहा है अगर यह संक्रमण काल कुछ सालों तक चलता रहा और ऑनलाइन टीचिंग में सुधार नहीं हुआ तो बच्चों के बौद्धिक विकास और शारीरिक विकास दोनों पर असर पड़ेगा भविष्य में चलकर देश के विकास पर भी बहुत बड़ा असर पड़ेगा क्योंकि आज के बच्चे कल का भविष्य है । ऑनलाइन क्लास का वीडियो 24 घंटे स्कूल की वेबसाइट पर उपलब्ध हो जिसका पासवर्ड बच्चों को दिया जाए ताकि जब भी अभिभावक को टाइम मिले वह अपने बच्चों को वीडियो के माध्यम से पढ़ा सके । बच्चों की शिक्षा को हल्के में लेना सही नहीं है नीवँ कमजोर हो गई तो देश की डोर किसके हाथों में रहेगी!

प्रीति वर्मा (रिसर्च स्कॉलर) कॉलमिस्ट पहड़िया वाराणसी, यूपी।

रूस में कीजिए डॉक्टरी की पढ़ाई, जानें जरूरी बातें!

बेशक आज कॅरियर के चाहे जितने आप्शन उपलब्ध हों, किंतु हकीकत यह है कि आज भी डॉक्टरी जैसे ट्रेडिशनल कोर्स का काफी क्रेज है। आज भी डॉक्टरी में एडमिशन हर किसी को नहीं मिलता और जिनको मिलता है, उनको इसके लिए भारी-भरकम फीस चुकानी पड़ती है।

इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि डॉक्टरी का पेशा अपने आप में 'सेल्फ एंप्लॉयड' पेशा है। आपने कोर्स किया और आप बड़ा हॉस्पिटल नहीं, तो छोटा क्लीनिक खोल कर अपना काम जमा सकते हैं। भारत जैसे देश में जहां अभी भी डाक्टरों की भारी कमी है, लाखों लोगों पर डॉक्टरों की जितनी संख्या होनी चाहिए, उससे कम संख्या उपलब्ध है।

भारत में विदेशों की तुलना में मेडिकल कॉलेजेस की भी काफी कम संख्या है और इसीलिए कई लोग विदेशों की ओर रुख करते हैं।

रूस जैसा देश जो भारत का पुराना रणनीतिक सहयोगी रहा है, वहां भी मेडिकल कोर्सेज करने के लिए लोग स्वेच्छा से जाते हैं। आइए जानते हैं इससे संबंधित जरूरी बातें...

इसके लिए सबसे पहले आपको नीट, यानी नेशनल एलिजिबिलिटी एंट्रेंस टेस्ट पास करना जरूरी होता है। इसके बाद ही आप यहां दाखिला ले सकते हैं। 'रूस में 25 परसेंट सीट्स विदेशी छात्रों लिए आरक्षित हैं। भारत के छात्र जो रूस से पढना चाहते हैं, उनके मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया के मुताबिक 50 परसेंट मार्क होने जरूरी हैं।

अगर खर्च की बात करें तो रूस में मेडिकल की पढ़ाई करना अपेक्षाकृत कम सस्ता है। खासकर तब, जब अमेरिका या दूसरी यूरोपियन कंट्रीज से

कई लोग इस गलतफहमी के शिकार होते हैं कि रूस से प्राप्त मेडिकल की डिग्री की बहुत वैल्यू नहीं होती है, तो आपको बता दें कि नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट यानी एनसीआई और डब्ल्यूएचओ, यानी वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन रूसी यूनिवर्सिटी की डिग्री को मान्यता देते हैं। जाहिर तौर पर भारत में भी इसे मान्यता मिल ही जाती है। वैसे भी ज्ञान कहीं बेकार नहीं जाता है। अगर आप भी रूस से मेडिकल कोर्स करना चाहते हैं और कहीं पैसे की कमी आती है तो छात्रों को प्रोसेसिंग फीस पर ही तकरीबन $1000 की स्कॉलरशिप मिल जाती है।

हम तुलना करते हैं। खास बात यह भी है कि रूस में अगर आप पढ़ाई करना चाहते हैं, तो मेडिकल कोर्सेज के लिए काफी सब्सिडी दी जाती है। एक अनुमान के मुताबिक, तकरीबन 12-13 लाख रुपए में आप मेडिकल का कोर्स भारत के इस 'मित्र देश' में आसानी से कर सकते हैं। खर्च के मामले में बता दें कि यह इंडिया के मुकाबले आधा ही पड़ता है।

जहां तक सब्सिडी की बात है, तो खुद कई यूनिवर्सिटीज को रूस की सरकार चलाती है, और इस वजह से वहां इंफ्रास्ट्रक्चर और दूसरी फैसिलिटीज भी गवर्नमेंट ही उपलब्ध कराती है। इसलिए आसानी से सब्सिडी भी मिल जाती है। अगर छात्रों की बात करें तो इसके लिए वहां एक डेडीकेटेड डिपार्टमेंट है, और वही हॉस्टल इत्यादि दूसरी सुविधाओं की देखरेख करता है।

कई लोग इस गलतफहमी के शिकार होते हैं कि रूस से प्राप्त मेडिकल की डिग्री की बहुत वैल्यू नहीं होती है, तो आपको बता दें कि नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट यानी एनसीआई और डब्ल्यूएचओ, यानी वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन रूसी यूनिवर्सिटी की डिग्री को मान्यता देते हैं। जाहिर तौर पर भारत में भी इसे मान्यता मिल ही जाती है।

वैसे भी ज्ञान कहीं बेकार नहीं जाता है। अगर आप भी रूस से मेडिकल कोर्स करना चाहते हैं और कहीं पैसे की कमी आती है तो छात्रों को प्रोसेसिंग फीस पर ही तकरीबन $1000 की स्कॉलरशिप मिल जाती है, जो आपकी पढ़ाई के दौरान परफॉर्मेंस पर निर्भर करती है।

यदि आप लेखन में रूचि रखते हैं तो बनाएं क्रिएटिव राइटिंग में कॅरियर

कॅरियर एक्सपर्ट कहते हैं कि एक क्रिएटिव राइटर को कल्पनाओं के आकाश में विचरने के साथ-साथ उसे कागज पर भी बेहतरीन तरीके से उतारने की कला आनी चाहिए। इसके अलावा उसके भीतर पढ़ने व नई चीजों को जानने की जिज्ञासा होनी चाहिए।

ऐसे बहुत से लोग होते हैं, जिन्हें लिखना बहुत पसंद होता है। लेखन की कई विधाएं हैं, इन्हीं में से एक है क्रिएटिव राइटिंग। लेखन के क्षेत्र की यह विधा बेहद कलात्मक है। इस क्षेत्र से जुड़े लोग वास्तव में रचनात्मक लेखक हैं, जिन्हें लोग उपन्यासकार, कवि, गीतकार आदि विभिन्न नामों से जानते हैं। क्रिएटिव राइटर्स के पास लेखन में जादुई शक्ति होती है और अपने काम के माध्यम से, वे पाठकों को प्रभावित कर सकते हैं और उन्हें परेशान, घृणित, मंत्रमुग्ध या खुश कर सकते हैं। आमतौर पर लोग इस काम को आसान मानते हैं, जबकि लेखन बनाना एक लंबी प्रक्रिया है जिसमें बहुत अधिक शोध और कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। अगर आप भी लेखन में अपनी रूचि रखते हैं तो इस क्षेत्र में अपने कदम बढ़ा सकते हैं-

क्या है क्रिएटिव राइटिंग

रचनात्मक लेखन वह लेखन है जिसमें एक लेखक का उद्देश्य गद्य और काव्य छंदों के माध्यम से अपनी भावनाओं, भावनाओं, कल्पनाशील विचारों और विचारों को व्यक्त करना है। विभिन्न तरह के लेखन जैसे उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक, आत्मकथा, पटकथा लेखन, कॉपी लेखन आदि को रचनात्मक लेखन कहा जाता है। रचनात्मक लेखन एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें प्राकृतिक दुनिया के चित्र बनाने के लिए बहुत अधिक कल्पना, अवलोकन और एक जन्मजात क्षमता की आवश्यकता होती है। विभिन्न विषयों और शैलियों पर लेख पढ़कर एक अच्छा लेखक बन सकता हैय हर तरह से जीवन का अनुभव करना और बहुत सारे मुहावरों, लहजों और स्थानीय भावों को सीखना और सुनना। वैसे तो क्रिएटिव राइटिंग कुछ लोगों को जन्मजात उपहार में मिलती हैं, लेकिन रचनात्मक लेखन में कोर्स करके कोई भी अपने लेखन कौशल में सुधार कर सकता है।

योग्यता

कॅरियर एक्सपर्ट कहते हैं कि रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में किसी औपचारिक शिक्षा की विशेष आवश्यकता नहीं है। आपकी कल्पना, अवलोकन और रचनात्मकता के साथ लिखने की क्षमता ही आपके भविष्य के मार्ग प्रशस्त करती है। हालांकि अंग्रेजी साहित्य या पत्रकारिता और संचार में एक शैक्षिक पृष्ठभूमि आपके करियर की राह को आसान बनाती है। वैसे भारत में कुछ संस्थान रचनात्मक लेखन में शार्ट टर्म कोर्स कराते हैं और इन पाठ्यक्रम में आवेदन करने के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता हायर सेकंडरी या 10+2 होनी चाहिए। इन पाठ्यक्रमों की न्यूनतम अवधि एक वर्ष है।

इसे भी पढ़ें: जर्मनी में पढ़ाई करें और बढ़िया स्कॉलरशिप भी पाएं

व्यक्तिगत गुण

कॅरियर एक्सपर्ट कहते हैं कि एक क्रिएटिव राइटर को कल्पनाओं के आकाश में विचरने के साथ-साथ उसे कागज पर भी बेहतरीन तरीके से उतारने की कला आनी चाहिए। इसके अलावा उसके भीतर पढ़ने व नई चीजों को जानने की जिज्ञासा होनी चाहिए, ताकि वह अपने शब्दकोश को अधिक मजबूत बना सके। चूंकि इन दिनों लेखन के लिए कंप्यूटर का इस्तेमाल किया जाने लगता है। इसलिए उसे कंप्यूटर का ज्ञान होना व इंटरनेट में आवश्यक सामग्री खोजने की कला आनी चाहिए। इसके अलावा उसके भीतर ऑब्जर्वेशन स्किल्स व कम्युनिकेशन स्किल्स भी मजबूत होने चाहिए। क्योंकि जब एक लेखक अपने या दूसरों के अनुभवों के पन्ने पर उतारता है तो उसका एक अलग ही प्रभाव देखने को मिलता है। इसके अलावा ऑब्जर्वेशन के जरिए उसके लेखन में भी विविधता को आसानी से देखा जा सकता है।

संभावनाएं

क्रिएटिव राइटर्स के पास अवसरों की कोई कमी नहीं है। कॅरियर एक्सपर्ट की मानें तो आप अपनी रूचि के अनुसार उपन्यास से लेकर संस्मरण, कविता, गीत, साइंस फिक्शन, रोमांस, स्क्रिप्ट, नाटक, यात्रा-वृत्तांत आदि लिख सकते हैं। इसके अलावा आप पत्र-पत्रिकाओं और समाचार पत्रों आदि के लिए रिपोर्ट, साक्षात्कार, सुविधाएँ, आलोचना और समीक्षाएं लिख सकता है। इसके अलावा, रचनात्मक लेखक वेब साइटों के लिए भी कंटेंट लिख सकते हैं या प्रिंट मीडिया के लिए लेख बना सकते हैं। आप किसी एक संस्थान से जुड़कर काम कर सकते हैं या फिर अलग-अलग संस्थानों के लिए फ्रीलांसिंग भी कर सकते हैं।

आमदनी

इस क्षेत्र में आमदनी आपके अनुभव व कौशल पर निर्भर करती हैं। शुरूआती दौर में एक क्रिएटिव राइटर आठ से दस हजार रूपए प्रतिमाह कमा सकता है। इसके बाद अनुभव बढ़ने के बाद आपका काम व आमदनी दोनों बढ़ती चली जाती है।

प्रमुख संस्थान

इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर मीडिया स्टडीज, अहमदाबाद

कर्नाटक स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी

लैपटॉप रिपेयरिंग सीखकर बनाएं अपना उज्ज्वल भविष्य

इस बात में कोई शक नहीं नहीं है कि लैपटॉप आज के समय में हमारे दैनिक जीवन की एक आवश्यकता बन गया है। ऑनलाइन शॉपिंग से लेकर बैंकिंग व ऑफिस के काम

आदि निपटाने के लिए हर व्यक्ति लैपटॉप को प्राथमिकता देता है। कुछ समय पहले तक जहां डेस्कटॉप का इस्तेमाल किया जाता था, लेकिन अब इनसे ज्यादा लैपटॉप को तवज्जो मिलने लगी है, क्योंकि इन्हें इस्तेमाल करना अपेक्षाकृत अधिक सुविधाजनक है। ऐसे में लैपटॉप रिपेयरिंग के क्षेत्र में भी कॅरियर की नई संभावनाएं पैदा हुई है। तो चलिए जानते हैं कैसे बनाएं लैपटॉप रिपेयरिंग के क्षेत्र में कॅरियर-

स्किल्स

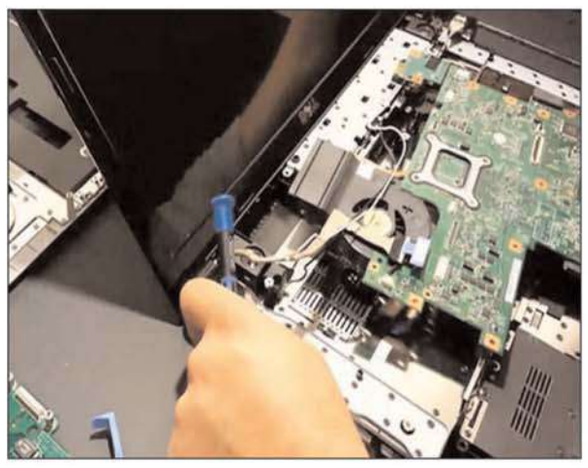

कॅरियर एक्सपर्ट के अनुसार, लैपटॉप रिपेयरिंग के क्षेत्र में कॅरियर देख रहे छात्रों के भीतर सीखने की गहन इच्छा होनी चाहिए। इसके अलावा आपको लैपटॉप हार्डवेयर की भी अगर थोड़ी-बहुत जानकारी होगी तो यह आपके लिए अच्छा होगा। इस क्षेत्र में छात्रों में मार्केट में लॉन्च हो रहे नए लैपटॉप व उनकी क्वालिटीज के बारे पता होना चाहिए। टेक्नोलॉजी के अपडेट होने के साथ-साथ अगर आप भी खुद को अपग्रेड रखते हैं तो इससे आपको अतिरिक्त लाभ होगा।

कोर्स

लैपटॉप रिपेयरिंग के क्षेत्र में कॅरियर देख रहे छात्रों के लिए किसी विशेष शैक्षणिक योग्यता का होना जरूरी है। आप किसी भी स्ट्रीम से दसवीं व बारहवीं के बाद लैपटॉप रिपेयरिंग का कोर्स कर सकते हैं। आप इस क्षेत्र में शार्ट टर्म कोर्स से लेकर सर्टिफिकेट व डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं। इनकी अवधि तीन से छह माह तक हो सकती हैं।

संभावनाएं

कॅरियर एक्सपर्ट बताते हैं कि लैपटॉप रिपेयरिंग कोर्स करने के बाद आपके पास काम की कोई कमी नहीं होती। दरअसल, आज के समय में लैपटॉप हर व्यक्ति की जरूरत बन गया है और इसलिए उसकी रिपेयरिंग के लिए एक्सपर्ट की डिमांड भी बढ़ी है। कोर्स करने के बाद आप लैपटॉप व कंप्यूटर रिपेयर शॉप्स, लैपटॉप सेल्स सेंटर, लैपटॉप शोरूम, लैपटॉप सर्विस सेंटर आदि में काम कर सकते हैं। इसके अलावा कुछ समय के अनुभव के बाद आप खुद की लैपटॉप रिपेयरिंग शॉप भी खोल सकते हैं।

आमदनी

इस क्षेत्र में आमदनी मुख्यतः आपके अनुभव और स्किल्स के आधार पर तय होती है। कोर्स करने के बाद आप शुरूआती दौर में 15000 से 20000 रूपए महीना सैलरी प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के अनुभव के बाद आपकी सैलरी में इजाफा होता है। इतना ही नहीं, अगर आप खुद की लैपटॉप रिपेयरिंग शॉप खोलते हैं तो आपकी मासिक आमदनी हजारों से लेकर लाखों में हो सकती है।

प्रमुख संस्थान

माइक्रोचिप एक्सपर्ट इंस्टीट्यूट, विभिन्न केन्द्र

मल्टीटेक इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस टेक्नोलॉजी, दिल्ली

हाईटेक इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस टेक्नोलॉजी

एक्सपर्ट इंस्टीट्यूट, विभिन्न केन्द्र

बेस्टटेक इंस्टीट्यूट

पीएम मोदी के इस शिक्षा कार्यक्रम के तहत युवा लेखकों को दिया जा रहा है बड़ा मौका

पीएम नरेंद्र मोदी के गतिशील नेतृत्व के तहत, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 युवाओं के दिमाग को सशक्त बनाने पर जोर देती है ताकि भारत का आने वाला भविष्य उज्वल हो सके। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस देश के युवा लेखकों को स्वतंत्रता सेनानियों पर किताबें लिखने के लिए प्रोत्साहित किया है। उन्होंने टएठळडफक्कठऋ डवठऋ अवळ्ळडफर नाम से एक नये कार्यक्रम की घोषणा की है। प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' के दौरान यह घोषणा की थी। उन्होंने कहा, ह्लहमें अपने युवा लेखकों की मदद करनी होगी और ऐसे नेताओं का एक वर्ग बनाना होगा जो हमारे भविष्य का निर्धारण करेंगे। मैं अपने युवा मित्रों को इस पहल का हिस्सा बनने और उनके साहित्यिक कौशल का अधिकतम उपयोग करने के लिए आमंत्रित करता हूं।

75वें स्वतंत्रता दिवस पर शुरू होगा

नये कार्यक्रम के तहत भारत के युवा लेखकों को देश के वीर, जिन्होंने भारत को आजादी दिलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था के बारे में किताब और लेख लिखना होगा। कार्यक्रम को हमारे देश के 75वें स्वतंत्रता दिवस पर '75 युवा भारत' के रूप में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में 75 युवा लेखकों को शामिल किया जाएगा। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा नेशनल बुक ट्रस्ट (एनबीटी) की तरफ से आयोजित इस कार्यक्रम की निगरानी की जाएगी। इच्छुक उम्मीदवारों को कार्यक्रम के लिए जल्द ही आवेदन करना होगा क्योंकि 1 अप्रैल 2021 को पहला मेंटरशिप बैच शुरू होगा। चयनित लेखकों को 6 से 9 महीने की अवधि के लिए विशेषज्ञों द्वारा सलाह दी जाएगी और अंत में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा एक पुस्तक प्रकाशित की जाएगी। इच्छुक लेखकों को ईमेल के माध्यम से एक आवेदन पत्र एनबीटी के निदेशक श्री युवराज मलिक को अपने आधिकारिक ईमेल पते पर भेजना होगा। अधिक जानकारी के लिए-

युवाओं को प्रदान किया जाएगा अंतरराष्ट्रीय मंच

भारत देश को युवाओं का देश कहा जाता है क्योंकि युवा आबादी में विश्व चार्ट में भारत सबसे ऊपर है। युवा शक्ति की ताकत पर भारत पूरी दुनिया में अपनी सहित्य और इतिहास को पहुंचा सकता है। हमारे देश को पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में 3 वां स्थान दिया गया है, और स्वदेशी साहित्य के इस खजाने को आगे बढ़ाने के लिए, यह जरूरी है कि हम इसे वैश्विक स्तर पर प्रोजेक्ट करें। यह योजना न केवल उन लेखकों की एक धारा विकसित करने में मदद करेगी जो भारतीय विरासत, संस्कृति और ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए विषयों के एक स्पेक्ट्रम पर लिख सकते हैं, बल्कि इच्छुक युवाओं को अपनी मातृभाषा में खुद को स्पष्ट करने और एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक मौका प्रदान करेगी। यह कार्यक्रम माननीय पीएम मोदी के ऋंड्ड' ड३९ल्ल के दृष्टिकोण के अनुरूप होगा और भारत को विश्व गुरु के रूप में स्थापित करेगा।

इसे भी पढ़ें: शिवराज ने बजट को आत्मनिर्भर भारत वाला बताया, बोले- इससे बढ़ेंगी आर्थिक गतिविधियां

क्या है एनबीटी की पूरी योजना

इस योजना में लेखकों को 22 भारतीय भाषाओं में लेखन करने की आजादी होगी। यह उन लेखकों के लिए बड़ा मंच होगा जो खुद को अभिव्यक्त करने और भारत को किसी भी अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रोजेक्ट करने के लिए तैयार हैं।

यह कार्यक्रम विश्व स्तर पर भारतीय संस्कृति और साहित्य को प्रोजेक्ट करने में मदद करेगा। इस कार्यक्रम में लेखक कथा, गैर-कल्पना, यात्रा-वृतांत, संस्मरण, नाटक, कविता और जैसी विभिन्न शैलियों में लिखने में कुशल हो जाएंगे। यह कार्यक्रम नौकरी के अन्य विकल्पों के साथ पठन और लेखन को एक पसंदीदा पेशे के रूप में लाना सुनिश्चित करेगा, जिससे भारत के बच्चे किताबों को अपने आप को संवारने का एक अभिन्न अंग बना लेंगे।

8 से 18 वर्ष की आयु के भारतीय इस प्रतियोगिता में भाग लेने के पात्र हैं। वे पुस्तक को 22 आधिकारिक भाषाओं और अंग्रेजी में से किसी में भी लिख सकते हैं।

प्रत्येक भाषा में कुल 10 लेखकों को मेंटरशिप के लिए चुना जाएगा। मेंटरशिप के तहत चयनित लेखक एक वर्ष की अवधि के लिए 12,000 (रुपये, 1000 मासिक वजीफा) के वजीफे के लिए पात्र होंगे। इस परियोजना का उद्देश्य विविध पृष्ठभूमि और भाषाई समूहों के लेखकों को शामिल करना है।

नगर में लॉकडाउन का दिखा व्यापक असर

सड़कों पर पसरा रहा सन्नाटा हर तरफ रही दुकानें बंद

भदोही। कोरोना के बढ़ते संक्रमण को देखते हुए शुक्रवार रात 8 बजे से सोमवार सुबह 7 बजे तक के लिए लाक डाउन शुरू हो गया है। शनिवार को नगर में लाक डाउन रहा। लाक डाउन और सरकार के गाइडलाइन का उलंघन करने वालों के खिलाफ पुलिस द्वारा सख्त कार्रवाई की गई।

बढ़ते कोरोना की रोकथाम के लिए प्रदेश सरकार की ओर से लागू साप्ताहांत लाक डाउन शुरू हो गया है। 59 घंटे तक सभी प्रकार की गतिविधियां प्रतिबंधित रही। इस दौरान दुकानें और प्रतिष्ठानें बंद रहे। सिर्फ जरुरी सामानों की दुकानें ही खुली रही। बैंक और सरकारी कार्यालयों में भी ताला लटका रहा। वहीं लोगों के घर से बाहर निकलने और सड़कों पर आवागमन पूरी तरह से प्रतिबंधित रहा। नगर में हर तरफ सड़कों पर पूरी तरह से सन्नाटा पसरा हुआ रहा।

नगर में आम दिनों में सबसे अधिक भीड़ और लोगों का आवागमन मेन रोड अजीमुल्लाह चौराहे के पास व स्टेशन रोड पर रहता है। लेकिन लाक डाउन के कारण वहां पर कोई आदमी देखने को नहीं मिला। अजीमुल्लाह चौराहे पर भारी मात्रा में पुलिस फोर्स की तैनाती रही। जहां से कोई भी पुलिस की नजर से बचकर नहीं निकल पा रहा था। दवाओं को लेने के लिए लोगों को घरों से बाहर निकलते देखा गया। मेडिकल स्टोर के बाहर दवा लेने के लिए लोग आते देखें गए। कुछ तो फिलहाल बेवजह भी अपने घरों से बाहर निकले। ऐसे लोगों के खिलाफ पुलिस द्वारा कोविड-19 महामारी अधिनियम में कार्रवाई की गई। इनके बाइको का ई-चालान किया गया। हालांकि कुछ को हिदायत देकर छोड़ दिया गया।

भदोही में कोरोना का वैक्सीनेशन हुआ तेज

भदोही। देश में जब कोरोना वैक्सीनेशन प्रोग्राम की शुरूआत हुई तो हर किसी को लगा कि जल्द ही कोरोना पूरी तरह से खत्म हो जाएगा। ऐसे में कोई कोरोना का वैक्सीन लगवाया तो कोई टीकाकरण कराने के बारे में सोच ही रहा था कि तब से कोरोना का दूसरा लहर आ गया। कोरोना का दूसरा लहर पहले की अपेक्षा काफी तगड़ा और हानिकारक है। पहले तो लोग इससे संक्रमित होने के बाद इलाज से ठीक हो जा रहे थे। वहीं इसके कारण होने वाली मौत की संख्या काफी कम थी। लेकिन दूसरे लहर में बडे ही तेजी के साथ लोग संक्रमित हो जा रहे हैं। इसके कारण काफी संख्या में लोगों की मौत हो जा रही है। ऐसे में लोगों में भय काफी बढ़ गया है। अब लोगो द्वारा कोरोना का वैक्सीनेशन कराने की होड़ सी मची हुई है। जिले के सभी सरकारी अस्पतालों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र व प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर 18 प्लस तक के उम्र के लोगों को निः शुल्क टीकाकरण किया जा रहा है। अखिल भारतीय पठान महासभा के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अलीशेर खां ने शनिवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भदोही में पहुंचकर वैक्सीनेशन कराया। हालांकि अब कई मामलों में ऐसा भी देखने को मिल रहा है कि वैक्सीन लगवाने के बाद भी लोग कोरोना पॉजिटिव हो रहे हैं। इस तरह के मामले सामने आने के बाद लोगों में चिंता बढ़ गई है। वैक्सीन लगवाने के बाद भी कोरोना संक्रमित होने की खबरों को देखते हुए वैज्ञानिकों ने साफ किया है कि टीकाकरण के बाद भी बहुत सावधानी बरतने की जरूरत वैक्सीन को शरीर में काम करने के लिए कुछ समय का वक्त लगता है। इस बीच अगर कोई इंसान जिसने वैक्सीन लगवाई है। वह कोरोना संक्रमित मरीज के संपर्क में आता है तो उसे भी कोरोना हो सकता है।

संक्षिप्त खबरें

कोरोना समय में मरीजो के लिए मशीहा बने डॉक्टर अविनाश सिंह

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। कोरोना योद्धा डॉ अविनाश सिंह एम डी फिजिशियन, साई क्लीनिक नदेसर (साई मन्दिर) को अपनी जान की परवाह नही । दिन रात मरीजो के सेवा में तत्पर रहना इनकी जिंदगी बन गई है। पिछले साल भी यह कोरोना काल में 24 घंटे फोन पर मरीजो का हाल चाल लेना व उनके घर तक दवा व जाँच की सुविधा उपलब्ध करा रहे थे ।वह इस बार भी कोरोना महामारी के समय मशीहा बन कर लोगो की सेवा कर रहे है। इस समय जहाँ कोई डॉक्टर फोन तक नही उठा रहे है, वह अपने नदेसर क्लीनिक में मरीजों के लिये सुबह 9 बजे से रात 9 तक मरीजो को देख रहे हैं। कमजोर व असहाय लोगो का निःशुल्क इलाज भी कर रहे हैं।

कोविड -19 के एडवाइजरी का अनुपालन करते हुए संस्था में आवासित बालको को कोविड-19 से बचाव के सम्बन्ध में जानकारी दी गई

प्रखर रामनगर वाराणसी। राजकीय बालगृह (बालक)रामनगर वाराणसी में कोविड-19 के एडवाइजरी का अनुपालन करते हुए संस्था में आवासित बालको को कोविड-19 से बचाव के सम्बन्ध में जानकारी दी गयी। संस्था में उपलब्ध सेनिटाइजर ,थर्मल स्केनर ,एक्सोमीटर ,ग्लब्स ,पीपी किट ,हेड कैप ,फेसमास्क ,हैंडवाश एवं ,हाइपोक्लोराइड आदि के उपयोग के सम्बन्ध में जानकारी दी गयी।साथ ही योग प्रशिक्षक श्री सुशील कुमार गुप्ता द्वारा सोशल डिस्टेंसिग का अनुपालन करते हुए योग ,ध्यान ,के विभिन्न क्रिया द्वारा रोग -प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने एवं बिपरीत परिस्थिति में भी सहज रहने हेतु प्रशिक्षण दिया गया।

गायब युवक का शव घर के पास कुएं में मिलने से सनसनी

प्रखर केराकत जौनपुर। केराकत कोतवाली क्षेत्र के खरगसेनपुर गांव से 5 दिन पहले लापता युवक की घर से दो किमी दूर कुएं में लाश मिली है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वही परिजनों ने पड़ोसी पर हत्या का आरोप लगाते हुए तहरीर दी है। मामले में पुलिस तहरीर के आधार पर जांच कर रही है। खर्गसेनपुर गांव निवासी 20 वर्षीय सूरज बिंद पुत्र छोटेलाल बिंद गत 19 अप्रैल को रात में भोजन करने के बाद बिस्तर पर सोने चला गया। सुबह परिजनों की नींद खुली तो सूरज बिस्तर पर नहीं था। परिजनों ने उसकी काफी तलाश की, लेकिन कहीं पता नहीं चला। परिजनों ने 20 अप्रैल को केराकत कोतवाली में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई। इस बीच शनिवार की दोपहर में मृतक के घर से एक किलोमीटर दूर खेत में एक महिलाओं को दुर्गन्ध आने पर नजर कुएं में पड़ी लाश पर पड़ी। शोरगुल मचाते हुए हुए उन्होंने ग्रामीणों को बुलाया। सैकडो की संख्या में ग्रामीण और परिजन मौके पर पहुच गए। सूचना पाकर केराकत कोतवाल विनय प्रकाश सिंह और थानागद्दी चौकी इंचार्ज सन्तोष राय भी मौके पर पहुंचे। शव को कुएं से बाहर निकाला गया तो शिनाख्त सूरज बिंद के रूप में हुई।घटना से परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया था।पुलिस मामले की छानबीन में जुटी है।

जिम्मेदार नेताओं एवं अधिकारी को बुला रही है ग्रामीण जनता

प्रखर चुनार मिजार्पुर। राजगढ़ विकासखंड क्षेत्र के दर्जनों गांव में आए दिन बहुत ही पानी की भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है फिर भी जिम्मेदार अधिकारी चुप्पी साध बैठे हुए हैं और मुस्की मारते नजर आ रहे हैं वही जिम्मेदार अधिकारी ने ग्रामीणों को तसल्ली देकर रखे हैं एवं करोना जैसे महामारी में ग्रामीणों को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है बार-बार अधिकारियों को ध्यान आकर्षित किया गया लेकिन फिर भी जिम्मेदार अधिकारी चुप्पी साधे बैठे हुए हैं किसको कहा जाए जिलाधिकारी महोदय कृपया आप भी तो गांव की दशा एक बार देख लें कैसे लोग किस हालात में किसी स्थिति में गुजर रहे हैं। वहीं ग्रामीण इलाकों में बड़े पदों पर कार्यरत नियुक्ति किए गए प्रधान मंत्री सांसद नेता आदि ऐसे लोग के गांव में खास कर समस्या बनी हुई है लेकिन उसके बावजूद भी ग्रामीण लोग किसको कहें किस जिम्मेदार अधिकारी को कहे इस बात को लेकर राष्ट्रीय पहल हिंदी दैनिक अखबार में खबरों को गंभीरता से प्रकाशित किया गया था उसके बावजूद भी जिम्मेदार अधिकारी चुप्पी साधे बैठे हुए हैं।

पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में जनपद के समस्त पुलिस थानों/चौकियों की साफ-सफाई कर किया गया सैनेटाइज

प्रखर संतकबीरनगर । श्रीमान पुलिस महानिरीक्षक बस्ती परिक्षेत्र बस्ती के आदेश के क्रम में पुलिस अधीक्षक संतकबीरनगर डॉ कौस्तुभ के निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक संतकबीरनगर श्री संतोष कुमार सिंह के पर्यवेक्षण में वैश्विक महामारी कोरोना संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए जनपद के विभिन्न स्थानों जैसे पुलिस कार्यालय, थानों, चौकियों, बैरकों, शौचालय, हवालात, आवासीय भवनों, पुलिस लाइन, पुलिस हास्पिटल, सभागार कक्ष, आदेश कक्ष, मेस, पुलिस कल्ब, फायर सर्विस के भवन व कार्यालय आदि को साशन द्वारा जारी कोविड-19 द्वारा जारी गाइडलाइन का पालन करते हुए 08:00 बजे से अभियान चलाकर साफ सफाई करने के साथ द्वारा दवा का छिड़काव कर सैनिटाइजेशन का कार्य किया गया । पुलिस अधीक्षक महोदय द्वारा यह भी निर्देश दिया गया कि कोई भी पुलिस कर्मी बिना मास्क के ड्यूटी न करें, सभी मास्क अवश्य लगायें एवं लोगों से 02 गज दूरी बनाकर रखें ।

नमामि गंगे द्वारा डिजिटल प्लेटफॉर्म पर गंगा गेस्ट 2021 का आयोजन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर सहेजने की दृष्टि से नमामि गंगे द्वारा वर्चुअल तरीके से " गंगा क्वेस्ट 2021" का आयोजन किया गया है । कोविड महामारी के दौर में इस प्रतियोगिता की विशेष बात यह है की इसे आप घर में सुरक्षित रह कर ऑनलाइन खेल सकते हैं - बिना घर से निकले और सामाजिक दूरी बनाए रखते हुए।

नमामि गंगे (गंगा विचार मंच) काशी प्रांत के संयोजक राजेश शुक्ला ने बताया कि गंगा क्वेस्ट का आयोजन केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के नेतृत्व में किया जा रहा है । इसका संयोजन राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के महानिदेशक राजीव रंजन मिश्रा एवं कार्यकारी निदेशक वित्त रोजी अग्रवाल कर रहे हैं । राजेश शुक्ला ने बताया कि नमामि गंगे का प्रयास है कि गंगा क्वेस्ट के माध्यम से गंगा की निर्मलता और अविरलता की दिशा में ज्यादा से ज्यादा लोगों, खासकर युवाओं और छात्रों को जोड़ना है । कोशिश है कि देश की अन्य नदियों को भी प्रदूषण मुक्त करने की दिशा में सकारात्मक वातावरण का निर्माण करने में योगदान दिया जा सके । गंगा के प्रति सार्वजनिक भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से नमामि गंगे द्वारा प्रतिवर्ष यह आयोजन किया जाता है । काशीवासियों से अनुरोध है कि अपने आस पास के बच्चों, बड़ों व अपने घरों के सभी सदस्यों को भी इस रोचक प्रतियोगिता में जोड़ने का प्रयास करें। ऑनलाइन प्रतियोगिता में घर बैठे न सिर्फ खुद भाग लें अपितु टेलीफोन और सोशल मीडिया के माध्यम से अपने निकटतम और जानकारों को भी शामिल करने के लिए उत्साहित करे। ध्यान रहे की इस प्रतियोगिता को आपको कोविड महामारी के चलते अपने घरों से ही खेलना है, न बाहर निकलना है और न किसी से मिलना है , बस अपने मोबाइल या कंप्यूटर से www.gangaquest.com पर लॉगिन करे और इस प्रतियोगिता में भाग लेकर पुरस्कार भी प्राप्त करें ।

छात्र लोजपा उत्तर प्रदेश अध्यक्ष अर्पण पाठक ने लिखा पत्र भारत सरकार से कोरोना टीकाकरण घर घर करने हेतु योजना की मांग

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। छात्र लोजपा उत्तर प्रदेश अध्यक्ष अर्पण पाठक ने पत्र के माध्यम से लोजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान से भारत सरकार से कोरोना टीकाकरण घर घर करने हेतु आयोजना कि मांग की । पत्र में विस्तार रूप से अर्पण पाठक ने लिखा है कि आज पूरा देश कोरोना वायरस की चपेट में आ गया है और रोजाना हजारो मौत देश मे हो रही है जिसको देखते हुए माननीय प्रधानमंत्री जी ने 1 मई 2021 से देश मे 18 वर्ष से ज्यादा की आयु वालो के लिए टीकाकरण करने की घोषणा की है । उत्तर प्रदेश में माननीय मुख्यमंत्री जी ने टीकाकरण निशुल्क करने का एलान किया है । उपरोक्त स्थिति में एवं देश मे लगातार हो रही मृत्यु को देखते हुए आम जनता में पहले टिका लगवाने के लिए लोग ज्यादा से ज्यादा संख्या में टिका लगवाने जायेगे जिससे संक्रमण का दर बहुत तेजी से बढ़ेगा । अतः मेरा आपसे अनुरोध है कि भारत सरकार से घर घर तक टीकाकरण करने की आयोजना बनाने की मांग करे जिससे जो भीड़ ज्यादा संख्या में उमड़ेगी उसको रोका जा सकेगा और संक्रमण का दर भी घट जाएगा । अगर हर विधायक सभासद को जिम्मेदारी दे दी जाए तो जैसे पोलियो का टीकाकरण घर घर तक हुआ था कोरोना का भी किया जा सकेगा , जहां चाह है वहां राह भी है ।

कोविड का टीका लगने के बाद भी शिक्षक ने तोड़ दिया दम

प्रखर मीरजापुर। 2 सप्ताह पूर्व कोविड का टीका लगने के बाद भी एक नगर निवासी सेवानिवृत्त अध्यापक की उपचार के दौरान मौत हो गई। कृष्ण गोपाल बरनवाल (72 वर्ष) जो नगर के ही नारघाट निवासी तथा माता प्रसाद माता भीख इंटर कॉलेज के शिक्षक भी रहे हैं। उन्हें 21अप्रैल 2021 को सांस लेने में हो रही तकलीफ को देखते हुए परिजन मंडली अस्पताल में लाकर भर्ती कराए थे जहां उनका उपचार चल रहा था कि उन्होंने शुक्रवार 23 अप्रैल की सुबह दम तोड़ दिया। परिजनों के मुताबिक उन्होंने 2 सप्ताह पूर्व ही 6 अप्रैल को कोविड का इंजेक्शन भी लगवाया था। उनके बेटे राहुल बरनवाल की माने तो उनके पिता कृष्ण गोपाल बरनवाल ने 6 अप्रैल को कोविड का टीका लगवाया था जिसके बाद से ही उनके स्वास्थ्य में गिरावट आनी शुरू हो गई थी। जिन्हें मिजार्पुर मंडली अस्पताल में लाकर दाखिल कराया गया था।

रोशनी कुशल जायसवाल ने एक्सयुवी गाड़ी जनता की सेवा में चौबीसो घंटा निःशुल्क सेवा में दिया

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। पिछले साल 2020 में लगातार छः महीने तक गरीब असहाय बनारस की जनता तक मास्क, सेनेटाइजर्स , राशन ,पका हुआ खाना एवं विकलांग और विधवाओं को आर्थिक सहायता देने के साथ साथ हर जरूरतमंद के संकट के समय में खड़ी रहने वाली बनारस की सोनू सूद रोशनी कुशल जायसवाल 2021 में पाण्डेयपुर निवासी गरीब दुखियारी महिला जिनका बेटा नेपाल में फँसा था पिछले 4 साल से उसे छुड़ाने के लिए एक लाख की आर्थिक मदद करने के पश्चात मात्र 15 दिनो में उनका बेटा उनका लाल उनके घर वापस आ गया। इस कोरोना के सैकेंड वेव में जहाँ जान गंवाना मामूली बात हो गई है जहाँ शमशान घाट पर शव जलाने तक की जगह नहीं है वहाँ अपनी एक्सयुवी गाड़ी को एंबुलेंस के रूप में तब्दील करके जनता जनार्दन की सेवा में देना क्योंकि जिस तरह से इस आपातकालीन स्थिति में कोई टोटों में अपनी जान गंवा रहा है कोई रिक्षा में कोई बीच सड़क पर उसी से प्रेरित होकर इस बार लोगों की जान बचा सकें । रोशनी कुशल जायसवाल ने जिलाधिकारी वाराणसी , कौशलराज शर्मा से परमिशन लेकर अपनी एक्सयुवी गाड़ी को जनता की सेवा में निःशुल्क चौबीसो घंटा लगा दिया है। उनका और उनकी पूरी टीम का हेल्पलाइन नंबर पूरे सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जो कि है ,रौशनी कुशल जायसवाल-7007588087, मोनू मिश्रा-7348042589 प्रांजल श्रीवास्तव-8299741952 और इनके टीम सदस्य आलम अंसारी ,अफजल अंसारी ,विक्रांत मिश्रा,कुशल जायसवाल ,आनंद जायसवाल ,सुजान खान ,जीशान खान, मुन्ना भाई, सूर्य प्रताप सिंह,सबसे ज्यादा धन्यवाद रोशनी, अफजल भाई का की है जिन्होंने गाड़ी चलाने का जोखिम उठाया और निस्वार्थ भाव से गाड़ी चलाकर लोगों को जिस भी हॉस्पिटल में जरूरत पड़ रही हैं वहाँ वहाँ पहुँचा रहे हैं।

भाजपा सभासद पालिका अध्यक्ष के आवास के गेट पर बैठे धरने पर जनता को मैनुअल रजिस्टर से राशन बटवाने की मांग

प्रखर रामनगर वाराणसी। आज दिनांक 24 अप्रैल 2021 को कोविड-19 वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के बढ़ते हुए प्रभाव को देखते हुए भाजपा सभासद संतोष शर्मा एवं पूर्व सभासद कुसुम लता शर्मा ने खाद्य पूर्ति विभाग द्वारा सरकारी गल्ले के दुकान पर आवंटित ई-पास मशीन (बायोमेट्रिक मशीन) हटवाने की मांग को लेकर पालिका अध्यक्ष श्रीमती रेखा शर्मा के आवास पर बैठे धरने पर। राशन कार्ड के आधार पर मैनुअल रजिस्टर के जरिए जनता को राशन बांटने का किया मांग। भाजपा सभासद संतोष शर्मा का कहना था की कोविड-19 वैश्विक महामारी कोराना वायरस को बढ़ते हुए प्रभाव को देखते हुए तत्काल प्रभाव से खाद्य पूर्ति विभाग को सरकारी गल्ले की दुकान पर आवंटित बायोमेट्रिक मशीन हटाकर उसे राशन कार्ड के आधार पर मैनुअल रजिस्टर के जरिए जनता को राशन बटवाने का कार्य होना चाहिए। ऐसा होने से संक्रमण का खतरा कम हो जाएगा। ज्यादा से ज्यादा संक्रमण को रोका जा सकता है। इस संकट के घड़ी में जनहित को देखते हुए और जनता की सुरक्षा के लिए जिला खाद्य पूर्ति विभाग को तत्काल प्रभाव से सरकारी गल्ले की दुकानों से बायोमेट्रिक मशीन हटवा कर अगले माह से बटने वाले राशन को राशन कार्ड के आधार पर मैनुअल रजिस्टर बना कर जनता को राशन बटवाने का कार्य करना चाहिए जिससे लोग सुरक्षित महसूस कर सकें। जनता को कोरोना संक्रमण से बचाने के लिए ऐसा जरूरी कदम उठाना चाहिए। भाजपा सभासद ने वहां उपस्थित आस-पड़ोस के लोगों से सुरक्षित रहते हुए अपने परिवार को सुरक्षित रखने का आग्रह किया। अंततः पालिका अध्यक्ष श्रीमती रेखा शर्मा ने संबंधित विभाग के उच्च अधिकारियों से तत्काल प्रभाव से इस मशीन को हटवाने एवं राशन कार्ड के आधार पर मैनुअल रजिस्टर बनाकर जनता को राशन बटवाने का आश्वासन देकर भाजपा सभासद का धरना समाप्त कराया।मुख्य रूप से भाजपा सभासद संतोष शर्मा पूर्व सभासद कुसुम लता शर्मा भाजपा नेता गोविंद प्रसाद आदि लोग थे।

कोरोना से घबराने की जरूरत नहीं डटकर सामना करने की जरूरत है- डॉ. एस कुमार

प्रखर सन्तकबीरनगर। आज पूरा देश कोविड -19 वैश्विक महामारी के प्रभाव में आ चुका है। इससे बचाव के लिए साहस की सार्वधिक जरूरत है। कोरोना से डरने की जरूरत नहीं बल्कि डटकर सामना करने की जरूरत है। इसके अलावा सोशल डिस्टेंसिंग साफ-सफाई माक्स का प्रयोग जरूरी है। संक्रमित के उपचार हेतु अत्याधुनिक अस्पताल के बावजूद मृत्यु दर के आंकड़े भयभीत कर रहे है। लेकिन ज्यादातर मरीज अस्पताल से ठीक हो करके घर भी वापस जा रहे है। उक्त बातें डाक्टर आशीर्वाद हॉस्पिटल के डॉ एस कुमार ने कही उन्होंने कहा कि आज जिस प्रकार का माहौल बना है उससे हर व्यक्ति में नकारात्मक प्रवृति तेजी से विकसित हो रहा है नकारात्मक सोच से हर व्यक्ति तनाव में है। इस तनाव का असर शरीर पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है कोरोना होते ही व्यक्ति इससे इतना डर रहा जा रहा है कि उसके शरीर में तमाम जरूरी तत्व खत्म हो जा रहे है। जिससे उसका आक्सीजनी कम हो जा रहा है कोरोना से डरने की जरूरत नहीं है बल्कि डटकर सामना करने से कोरोना को हराया जा सकता है। ऑक्सीजन स्तर बढ़ने के लिए कोरोना संक्रमित को पेट के बल पर कम से कम आधे घंटे लेटना चाहिए। डॉक्टर एस कुमार ने कहा कि नियमित व्यायाम जरूर करे। पौष्टिक आहार विशेषकर शाकाहारी भोजन हरी सब्जी का सेवन जरूर करे। पानी अधिक पीने और ग्रीन टी पीने से शरीर के पद को उत्सर्जित होने में मदद देती है। ऐसे आहार नींबू, पपीता, टमाटर, लहसुन, एवं घरेलू मसाले उपयोगी है। घर के किसी भी हिस्से में जहां धूप आती है वहां 15 मिनट जरूर बैठे जो कि विटामिन डी संतुलन में सहायक होगा।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट https://prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं